CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2011 with Solution PDF-Set 2/2/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 111**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 7, 8, 10, 14 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1(क). महाप्रलय की अग्नि साथ लेकर जो जग में आए विश्वबली शासन का भय जिनके आगे शरमाए । चले गए जो शीश चढ़ाकर अर्घ्य दिया प्राणों का चलें मज़ारों पर हम उनकी, दीपक एक जलाएँ । टूट गई बंधन की कड़ियाँ स्वतंत्रता की बेला लगता है मन आज हमें कितना अवसन्न अकेला । जीत गए, हम जीता विद्रोही अभिमान हमारा । प्राणदान से क्षुब्ध तरंगों को मिल गया किनारा । उदित हुआ रवि स्वतंत्रता का व्योम उगलता जीवन, आज़ादी की आग अमर है, घोषित करता कण-कण । कलियों के अधरों पर पलते रहे विलासी कायर, उधर मृत्यु पैरों से बाँधे, रहा जूझता यौवन । उस शहीद यौवन की सुधि हम क्षण भर को न बिसारें, उसके पग-चिह्नों पर अपने मन के मोती वारें ॥ कवि किनकी मज़ारों पर दीपक जलाने का आह्वान कर रहा है और क्यों ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में स्वतंत्रता के लिए प्राण न्योछावर करने वाले वीरों का स्मरण किया गया है।
- उत्तर का आधार प्रश्न में दिया गया पाठ और उसके प्रसंगगत संकेत हैं।

चरण 1: वीरों की पहचान कवि उन शहीदों की मज़ारों पर दीपक जलाने को कहता है जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अपना शीश चढ़ाकर प्राणों का अर्घ्य दिया।

चरण 2: आह्वान का उद्देश्य दीपक जलाना उनके त्याग के प्रति श्रद्धा, कृतज्ञता और सम्मान व्यक्त करना है। कवि चाहता है कि स्वतंत्रता मिलने पर भी हम उनके बलिदान को न भूलें।

चरण 3: निष्कर्ष कवि स्वतंत्रता के लिए प्राण देने वाले शहीदों की मज़ारों पर उनके बलिदान के सम्मान और कृतज्ञ स्मरण के लिए दीपक जलाने का आह्वान करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में किनकी और क्यों, दोनों बातों को प्राणों के अर्घ्य वाली पंक्ति से जोड़ें।

1(ख). 'टूट गई बंधन की कड़ियाँ' कवि किस बंधन की बात कर रहा है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य में बंधन की कड़ियाँ देश की पराधीनता का प्रतीक हैं।
- उत्तर का आधार प्रश्न में दिया गया पाठ और उसके प्रसंगगत संकेत हैं।

चरण 1: प्रसंग पहचानें इस पंक्ति के तुरंत बाद स्वतंत्रता की बेला का उल्लेख है। इससे स्पष्ट है कि बंधन किसी व्यक्ति की निजी बाधा नहीं, देश की पराधीनता है।

चरण 2: कड़ियाँ टूटने का अर्थ विदेशी शासन की गुलामी समाप्त होने को बंधन की कड़ियाँ टूटना कहा गया है। स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान से देश को इस दासता से मुक्ति मिली।

चरण 3: निष्कर्ष कवि विदेशी शासन की दासता और पराधीनता के बंधन की बात कर रहा है। इन कड़ियों का टूटना देश का स्वतंत्र होना है।

त्वरित सुझाव: प्रतीक का अर्थ तय करने के लिए अगली पंक्ति में आए स्वतंत्रता शब्द को आधार बनाएँ।

1(ग). 'विश्वबली शासन' किसे कहा है ? क्यों ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विशेषण का आशय समझने के लिए शासन के सामने निर्भय खड़े वीरों के प्रसंग को देखें।

- उत्तर का आधार प्रश्न में दिया गया पाठ और उसके प्रसंगगत संकेत हैं।

चरण 1: शासन का संकेत यहाँ विश्वबली शासन से अभिप्राय उस शक्तिशाली विदेशी शासन से है जिसने देश को पराधीन बना रखा था। स्वतंत्रता और बलिदान का प्रसंग इसी अर्थ को पुष्ट करता है।

चरण 2: विशेषण का कारण उस शासन की शक्ति और प्रभाव बहुत व्यापक थे तथा उसका भय लोगों पर छाया हुआ था। फिर भी क्रांतिकारी वीरों के साहस के सामने उसका आतंक निष्प्रभावी हो जाता था।

चरण 3: निष्कर्ष विश्वबली शासन शक्तिशाली विदेशी शासन को कहा गया है, क्योंकि उसका प्रभाव और आतंक व्यापक था; शहीदों का निर्भय साहस उसके भय को भी लज्जित कर देता था।

त्वरित सुझाव: किसे के साथ क्यों का उत्तर भी दें और वीरों की निर्भयता से विशेषण का संबंध स्पष्ट करें।

1(घ). शहीद किसे कहते हैं ? शहीदों के बलिदान से हमें क्या प्राप्त हुआ ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश शहीदों के प्राणदान को स्वतंत्रता की प्राप्ति से जोड़ता है।
- उत्तर का आधार प्रश्न में दिया गया पाठ और उसके प्रसंगगत संकेत हैं।

चरण 1: शहीद का अर्थ देश की स्वतंत्रता और रक्षा जैसे महान उद्देश्य के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने वाले व्यक्ति को शहीद कहते हैं। कविता में ऐसे वीरों के शीश चढ़ाने का उल्लेख है।

चरण 2: बलिदान का फल इन वीरों के त्याग से देश की पराधीनता की कड़ियाँ टूटीं और स्वतंत्रता प्राप्त हुई। स्वतंत्रता का सूर्य उदित होने का चित्र इसी उपलब्धि को व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष देश के लिए प्राण न्योछावर करने वाले वीर शहीद कहलाते हैं। उनके बलिदान से हमें विदेशी शासन की गुलामी से मुक्ति और स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

त्वरित सुझाव: परिभाषा लिखने के बाद बलिदान का फल स्वतंत्रता की बेला वाली पंक्ति से स्पष्ट करें।

1(ङ). आशय स्पष्ट कीजिए : जीत गए, हम जीता विद्रोही अभिमान हमारा प्राणदान से क्षुब्ध तरंगों को मिल गया किनारा । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विद्रोही अभिमान स्वाधीनता चाहने वाले आत्मसम्मान और क्षुब्ध तरंगें संघर्ष की व्याकुलता का संकेत हैं।
- उत्तर का आधार प्रश्न में दिया गया पाठ और उसके प्रसंगगत संकेत हैं।

चरण 1: विजय का आशय कवि कहता है कि स्वतंत्रता के संघर्ष में देशवासियों के स्वाभिमान की विजय हुई। दासता स्वीकार न करने वाली विद्रोही भावना अंततः सफल हुई और देश स्वतंत्र हो गया।

चरण 2: प्राणदान और किनारा वीरों के प्राणों के बलिदान ने संघर्षरत जनता की बेचैनी और स्वतंत्रता की आकांक्षा को लक्ष्य तक पहुँचाया। तरंगों को किनारा मिलने का अर्थ संघर्ष का सफल परिणति पाना है।

चरण 3: निष्कर्ष इन पंक्तियों का आशय है कि शहीदों के प्राणदान से देश का स्वाभिमानी स्वतंत्रता-संघर्ष सफल हुआ और व्याकुल जनमानस को स्वतंत्रता के रूप में अपना लक्ष्य मिल गया।

त्वरित सुझाव: भावार्थ में तरंगों और किनारे का शाब्दिक वर्णन करने के स्थान पर संघर्ष और उसकी सफलता लिखें।

2(क). साहित्य का जीवन के साथ गहरा सम्बन्ध है । साहित्यकार अपनी पैनी दृष्टि से देखता है और संवेदनशील मन से उसको अभिव्यक्त करता है । चारों ओर देखे गए सत्य और भोगे हुए यथार्थ को कभी कल्पना के रंग में रंग कर, तो कभी ज्यों-का-त्यों पाठक के सामने प्रस्तुत कर देता है । साहित्यकार में सौंदर्य को देखने और परखने की अद्भुत शक्ति होती है । मनोरम दृश्यों के सौंदर्य और मुग्ध कर देने वाले स्वरों की मधुरता से वह अकेले ही आनंदमग्न नहीं होना चाहता । वह दूसरों को भी आनंदमग्न करने के लिए सदा आतुर रहता है । साहित्यकार जब समाज को अपने मन की बात सुनाता है तो साहित्यकार और समाज का सम्बन्ध स्पष्ट दिखाई पड़ता है । समाज की रूढ़ियों और विद्रूपताओं को उजागर कर वह जनमानस को जागृत करता है । उन्हें बताता है कि जो कुछ पुराना है, वह सोना ही हो — यह आवश्यक नहीं । हमें जकड़ने वाली, पीछे धकेलने वाली रूढ़ियों से छुटकारा पाना होगा । इस प्रकार साहित्यकार समाज का पथ-प्रदर्शक भी है और पथ-निर्माता भी । वह समाज को परिवर्तन और क्रांति के लिए भी तैयार करता है । यह सत्य है कि अनेक साहित्यिक रचनाएँ क्रांति की आधारशिला रखने में समर्थ हुई हैं । इसलिए साहित्य को केवल मनोरंजन की वस्तु मानना अपनी आँखों पर पट्टी बाँधकर सूर्य को नकारना है । उपर्युक्त गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपयुक्त शीर्षक पूरे गद्यांश के मुख्य प्रतिपाद्य को संक्षेप में व्यक्त करता है।
- उत्तर का आधार प्रश्न में दिया गया पाठ और उसके प्रसंगगत संकेत हैं।

चरण 1: मुख्य विषय पहचानें गद्यांश साहित्य के जीवन और समाज से गहरे संबंध की चर्चा करता है। साहित्यकार जीवन के सत्य को व्यक्त करता है और दूसरों को सौंदर्य का आनंद भी देता है।

चरण 2: व्यापकता जाँचें इसके आगे साहित्यकार को रूढ़ियों के विरोध, जनजागरण और परिवर्तन का प्रेरक बताया गया है। इसलिए शीर्षक में केवल मनोरंजन नहीं, साहित्य और समाज का संबंध समाहित होना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है : साहित्य और समाज।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय आरंभ और अंत दोनों का विचार देखें ताकि वह पूरे गद्यांश का प्रतिनिधित्व करे।

2(ख). साहित्यकार की दृष्टि और मन के लिए प्रयुक्त विशेषणों का आशय स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में दृष्टि के लिए पैनी और मन के लिए संवेदनशील विशेषण आए हैं।
- उत्तर का आधार प्रश्न में दिया गया पाठ और उसके प्रसंगगत संकेत हैं।

चरण 1: पैनी दृष्टि का आशय पैनी दृष्टि का अर्थ है सूक्ष्म, गहरी और मर्म पहचानने वाली दृष्टि। साहित्यकार बाहरी दृश्य देखकर रुक नहीं जाता; वह जीवन के सत्य, समाज की रूढ़ियों और विद्रूपताओं को पहचानता है। चारों ओर देखे गए सत्य तथा भोगे हुए यथार्थ को पकड़ने की उसकी क्षमता इसी विशेषण से व्यक्त होती है।

चरण 2: संवेदनशील मन का आशय संवेदनशील मन दूसरों के सुख-दुख, जीवन के अनुभवों और सौंदर्य को गहराई से अनुभव करता है। साहित्यकार मनोरम दृश्यों और मधुर स्वरों से स्वयं ही आनंदित नहीं होता, बल्कि उस अनुभूति में दूसरों को भी भागीदार बनाना चाहता है। इसलिए उसकी अभिव्यक्ति अनुभूति और मानवीय संवेदना से जुड़ी होती है।

चरण 3: निष्कर्ष पैनी दृष्टि जीवन और समाज के सूक्ष्म सत्य को पहचानने की क्षमता है; संवेदनशील मन उन अनुभवों, सुख-दुख और सौंदर्य को गहराई से अनुभव कर व्यक्त करने की शक्ति है।

त्वरित सुझाव: दोनों विशेषणों को अलग-अलग समझाएँ और प्रत्येक का अर्थ गद्यांश में बताए साहित्यकार के कार्य से जोड़ें।

2(ग). साहित्यकार सत्य को पाठक के समक्ष कैसे रखता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के अनुसार साहित्यकार देखे हुए सत्य और भोगे हुए यथार्थ को पाठक तक पहुँचाता है।
- उत्तर का आधार प्रश्न में दिया गया पाठ और उसके प्रसंगगत संकेत हैं।

चरण 1: प्रस्तुति का आधार साहित्यकार की रचना का आधार उसके चारों ओर का जीवन है। वह अपनी पैनी दृष्टि से सत्य को देखता और संवेदनशील मन से उसे अनुभव करता है। इस प्रकार उसकी प्रस्तुति केवल सुनी हुई बात नहीं, देखे और भोगे हुए जीवन से संबंध रखती है। गद्यांश इसी आधार को साहित्य और जीवन के गहरे संबंध का प्रमाण बनाता है।

चरण 2: प्रस्तुति के दो ढंग वह सत्य को कभी कल्पना के रंग में रंगकर रखता है, जिससे अनुभव को कलात्मक अभिव्यक्ति मिलती है। कभी वह उसी यथार्थ को ज्यों का त्यों प्रस्तुत कर देता है। दोनों स्थितियों में केंद्र जीवन का सत्य रहता है; अंतर केवल उसे पाठक के सामने रखने की शैली में होता है।

चरण 3: निष्कर्ष साहित्यकार चारों ओर देखे गए सत्य और भोगे हुए यथार्थ को कभी कल्पना के रंग में रंगकर तथा कभी ज्यों का त्यों पाठक के समक्ष प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कभी कल्पना के साथ और कभी ज्यों का त्यों, ये दोनों ढंग अवश्य लिखें।

2(घ). साहित्यकार और समाज का संबंध कब दिखाई पड़ता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के तथ्यपरक प्रश्न का उत्तर उसी वाक्य से लिया जाता है जिसमें प्रश्न के प्रमुख शब्द आए हों।
- यहाँ साहित्यकार की अनुभूति और समाज तक उसके संप्रेषण के बीच संबंध समझना आवश्यक है।

चरण 1: संबंध बताने वाला वाक्य पहचानना गद्यांश में स्पष्ट कहा गया है कि साहित्यकार जब समाज को अपने मन की बात सुनाता है, तब दोनों का संबंध दिखाई पड़ता है। यह कथन प्रश्न के समयसूचक शब्द "कब" का सीधा उत्तर देता है।

चरण 2: उत्तर व्यक्त करना साहित्यकार अपनी अनुभूतियों और विचारों को साहित्य के माध्यम से समाज तक पहुँचाता है। इसी अभिव्यक्ति के अवसर पर उसके और समाज के बीच का संबंध स्पष्ट होता है।

चरण 3: निष्कर्ष साहित्यकार जब समाज को अपने मन की बात सुनाता है, तब साहित्यकार और समाज का संबंध स्पष्ट दिखाई पड़ता है।

त्वरित सुझाव: "कब" का उत्तर देते हुए गद्यांश का "जब समाज को अपने मन की बात सुनाता है" वाला अंश लिखिए।

2(ङ). साहित्यकार को समाज का पथ-निर्माता और पथ-प्रदर्शक क्यों कहा गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में साहित्यकार की भूमिका केवल मनोरंजन कराने तक सीमित नहीं है; वह जनमानस को जागृत भी करता है।
- पथ-प्रदर्शक दिशा दिखाता है, जबकि पथ-निर्माता परिवर्तन के लिए आधार तैयार करता है। इन दोनों पक्षों को गद्यांश से जोड़ना है।

चरण 1: पथ-प्रदर्शन का कारण साहित्यकार समाज की रूढ़ियों और विद्रूपताओं को उजागर करके लोगों को जागृत करता है। वह समझाता है कि हर पुरानी चीज उपयोगी या श्रेष्ठ नहीं होती। इसलिए समाज को जकड़ने और पीछे धकेलने वाली रूढ़ियों से छुटकारा पाना

चाहिए। इस प्रकार वह समाज को आगे बढ़ने की दिशा दिखाता है।

चरण 2: पथ-निर्माण का कारण वह अपनी रचनाओं से समाज को परिवर्तन और क्रांति के लिए तैयार करता है। गद्यांश में अनेक साहित्यिक रचनाओं को क्रांति की आधारशिला रखने में समर्थ बताया गया है। जनचेतना जगाना और परिवर्तन का आधार तैयार करना ही उसकी पथ-निर्माता की भूमिका है।

चरण 3: निष्कर्ष रूढ़ियों और विकृतियों के प्रति जनमानस को जागृत कर सही दिशा दिखाने तथा परिवर्तन और क्रांति की आधारभूमि तैयार करने के कारण साहित्यकार समाज का पथ-प्रदर्शक और पथ-निर्माता कहलाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दो अलग बातें अवश्य रखिए: रूढ़ियों से मुक्ति की दिशा दिखाना और परिवर्तन की आधारभूमि बनाना।

2(च). आशय स्पष्ट कीजिए : 'अपनी आँख पर पट्टी बाँधकर सूर्य को नकारना' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आशय स्पष्ट करते समय कथन के शब्दार्थ के साथ उसका प्रसंगगत संकेत भी बताया जाता है।
- इस गद्यांश में सूर्य का उल्लेख साहित्य की प्रत्यक्ष सामाजिक उपयोगिता को नकारने की भूल समझाने के लिए हुआ है।

चरण 1: शाब्दिक स्थिति समझना आँख पर पट्टी बाँध लेने से व्यक्ति सूर्य को देख नहीं पाता, किंतु इससे सूर्य का अस्तित्व समाप्त नहीं हो जाता। अपनी देखने की क्षमता स्वयं रोककर किसी प्रत्यक्ष सत्य को झुठलाना अज्ञान और जानबूझकर सत्य से मुँह मोड़ने का परिचायक है।

चरण 2: गद्यांश के प्रसंग में अर्थ लेखक के अनुसार साहित्य जनमानस को जागृत करता है और परिवर्तन तथा क्रांति की आधारशिला रख सकता है। इतनी व्यापक भूमिका होते हुए भी साहित्य को केवल मनोरंजन की वस्तु मानना उसकी सामाजिक शक्ति की उपेक्षा करना है। इसी संकुचित दृष्टि की तुलना आँख पर पट्टी बाँधकर सूर्य को नकारने से की गई है।

चरण 3: निष्कर्ष इस कथन का आशय है कि स्पष्ट सत्य से जानबूझकर आँखें मूँद लेना उसे असत्य नहीं बना देता। साहित्य को केवल मनोरंजन मानकर उसकी समाज-जागरण और परिवर्तनकारी भूमिका नकारना भी ऐसी ही भूल है।

त्वरित सुझाव: पहले पट्टी बाँधने का सामान्य अर्थ बताइए, फिर उसे साहित्य की सामाजिक भूमिका नकारने से जोड़िए।

2(छ). साहित्यकार समाज को परिवर्तन और क्रांति के लिए कैसे तैयार करता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस प्रश्न में साहित्यकार के कार्य का क्रम समझाना है: सामाजिक दोषों का उद्घाटन, चेतना का जागरण और परिवर्तन की तैयारी।
- उत्तर का आधार गद्यांश में उल्लिखित रूढ़ियाँ, विद्रूपताएँ और क्रांति की आधारशिला हैं।

चरण 1: समाज की समस्याएँ सामने रखना साहित्यकार अपनी रचनाओं में समाज की रूढ़ियों और विद्रूपताओं को उजागर करता है। इससे जनमानस अपनी स्थिति के प्रति जागरूक होता है। वह लोगों को बताता है कि कोई बात केवल पुरानी होने से श्रेष्ठ नहीं हो जाती; पीछे धकेलने वाली रूढ़ियों से छुटकारा पाना आवश्यक है।

चरण 2: परिवर्तन के लिए चेतना जगाना इस जागृति के द्वारा साहित्यकार रूढ़ियों के बंधन को पहचानने और उनसे मुक्ति पाने की इच्छा उत्पन्न करता है। उसके विचार समाज को नई दिशा की ओर बढ़ने के लिए तैयार करते हैं। इसी अर्थ में गद्यांश कहता है कि अनेक साहित्यिक रचनाएँ क्रांति की आधारशिला रखने में समर्थ हुई हैं।

चरण 3: निष्कर्ष साहित्यकार रूढ़ियों और विद्रूपताओं को उजागर करके जनमानस को जागृत करता है, जकड़ने वाली परंपराओं से

मुक्ति की प्रेरणा देता है और अपनी रचनाओं से परिवर्तन तथा क्रांति की आधारभूमि तैयार करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर का क्रम रखिए: रूढ़ियों को उजागर करना, लोगों को जागृत करना और मुक्ति व परिवर्तन की प्रेरणा देना।

2(ज). उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए — विद्रूपता, परिवर्तनीय । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मूल शब्द या धातु से पहले जुड़ने वाला अंश उपसर्ग और उसके बाद जुड़ने वाला शब्दनिर्माणकारी अंश प्रत्यय होता है।
- यहाँ दोनों शब्दों में आरंभ का उपसर्ग तथा अंत का प्रत्यय अलग करके बीच का मूल रूप दिखाना है।

चरण 1: विद्रूपता का विभाजन विद्रूपता में उपसर्ग "वि" और प्रत्यय "ता" है। प्रत्यय की दृष्टि से इसका विभाजन "विद्रूप + ता" किया जाता है। "विद्रूप" का अर्थ विकृत या बिगड़ा हुआ रूप है और "ता" उस अवस्था या भाव का बोध कराता है। प्रश्न दोनों अंश पूछता है, इसलिए उपसर्ग और प्रत्यय की पहचान अलग-अलग लिखनी चाहिए। केवल प्रत्यय बताने से उत्तर पूरा नहीं होगा।

चरण 2: परिवर्तनीय का विभाजन परिवर्तनीय का विभाजन है: परि + वृत् + अनीय। इसमें "परि" उपसर्ग और "अनीय" प्रत्यय है। धातु "वृत्" से प्रत्यय जुड़ने पर "वर्तनीय" रूप बनता है और उपसर्ग के साथ "परिवर्तनीय" शब्द बनता है। प्रत्यय को केवल अंतिम अक्षर "य" मानना उचित नहीं है; पूरा प्रत्यय "अनीय" है।

चरण 3: निष्कर्ष विद्रूपता: उपसर्ग "वि", प्रत्यय "ता"। परिवर्तनीय: उपसर्ग "परि", प्रत्यय "अनीय"।

त्वरित सुझाव: शब्द का केवल पहला या अंतिम अक्षर न काटें; विद्रूपता में वि/ता और परिवर्तनीय में परि/अनीय पहचानिए।

2(झ). 'हमें पीछे धकेलने वाली रूढ़ियों से छुटकारा पाना होगा ।' उपर्युक्त वाक्य को मिश्र वाक्य में बदलिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और कम-से-कम एक आश्रित उपवाक्य होता है।
- विशेषण पदबंध को "जो" से आरंभ होने वाले विशेषण उपवाक्य में बदलकर मूल अर्थ सुरक्षित रखा जा सकता है।

चरण 1: विशेषण पदबंध पहचानना मूल वाक्य में "हमें पीछे धकेलने वाली" पदबंध "रूढ़ियों" की विशेषता बताता है। इसे "जो हमें पीछे धकेलती हैं" में बदलने पर अपना क्रियापद रखने वाला आश्रित उपवाक्य बन जाता है।

चरण 2: प्रधान और आश्रित उपवाक्य जोड़ना प्रधान उपवाक्य "हमें उन रूढ़ियों से छुटकारा पाना होगा" है। उससे आश्रित विशेषण उपवाक्य "जो हमें पीछे धकेलती हैं" जोड़ते हैं। "रूढ़ियों" के बहुवचन के अनुसार "धकेलती हैं" का प्रयोग होता है।

चरण 3: निष्कर्ष हमें उन रूढ़ियों से छुटकारा पाना होगा, जो हमें पीछे धकेलती हैं।

त्वरित सुझाव: "पीछे धकेलने वाली" को "जो हमें पीछे धकेलती हैं" में बदलिए और मुख्य वाक्य का अर्थ बनाए रखिए।

3. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर निबन्ध लिखिए : (क) राष्ट्रमंडल खेलों में भारत का प्रदर्शन (ख) बाढ़ की विभीषिका (ग) बेरोज़गारी की समस्या (घ) मेरी प्रिय पुस्तक [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का स्पष्ट परिचय, विचारों का क्रमबद्ध विस्तार और सार्थक उपसंहार आवश्यक हैं। तथ्य, उदाहरण और सुझाव विषय के अनुरूप होने चाहिए।
- विषय-चयन का विकल्प होते हुए भी अभ्यास के लिए चारों विषयों के स्वतंत्र आदर्श निबंध दिए गए हैं। परीक्षा में चुने हुए एक विषय पर सुसंगत उत्तर लिखना चाहिए।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति पहले उपयुक्त शीर्षक दें। भूमिका में विषय का परिचय, मध्य भाग में प्रमुख पक्ष और अंतिम अनुच्छेद में निष्कर्ष या सुझाव रखें। खेल संबंधी विषय में उपलब्धियाँ और सीख, बाढ़ में प्रभाव और बचाव, बेरोज़गारी में कारण और उपाय तथा प्रिय पुस्तक में परिचय और उसके प्रभाव का वर्णन करें। प्रत्येक निबंध अपने आप में पूर्ण है।

चरण 2: (क) आदर्श निबंध: राष्ट्रमंडल खेलों में भारत का प्रदर्शन राष्ट्रमंडल खेलों में भारत का प्रदर्शन

वर्ष 2010 में दिल्ली में आयोजित राष्ट्रमंडल खेल भारतीय खेल-जगत के लिए विशेष अवसर थे। अपने देश में अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता का आयोजन खिलाड़ियों के साथ पूरे समाज के लिए उत्साह और उत्तरदायित्व लेकर आया। भारतीय खिलाड़ियों ने इस अवसर पर अपनी प्रतिभा, अनुशासन और कठिन परिश्रम का परिचय दिया।

भारत ने 38 स्वर्ण, 27 रजत और 36 कांस्य सहित कुल 101 पदक प्राप्त किए और पदक-तालिका में दूसरा स्थान हासिल किया। निशानेबाज़ी, कुश्ती, मुक्केबाज़ी, बैडमिंटन तथा अन्य स्पर्धाओं में खिलाड़ियों ने उल्लेखनीय सफलता पाई। महिला खिलाड़ियों की उपलब्धियों ने विशेष रूप से यह संदेश दिया कि अवसर और सुविधाएँ मिलने पर वे किसी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। इन सफलताओं के पीछे वर्षों का अभ्यास, प्रशिक्षकों का मार्गदर्शन और खिलाड़ियों का आत्मविश्वास था।

इन खेलों ने युवाओं में खेलों के प्रति रुचि बढ़ाई। देश ने देखा कि क्रिकेट के अतिरिक्त भी अनेक खेलों में विश्वस्तरीय प्रदर्शन संभव है। किंतु उपलब्धियों का उत्सव मनाते समय आयोजन से जुड़े खर्च, पारदर्शिता और सुविधाओं के उपयोग पर भी विचार करना चाहिए। खेलों के लिए बने मैदान और प्रशिक्षण-केंद्र तभी सार्थक हैं जब सामान्य विद्यार्थियों तथा उभरते खिलाड़ियों को उनका लाभ मिले।

इस प्रदर्शन को स्थायी प्रगति का आधार बनाना आवश्यक है। विद्यालयों में खेल-संस्कृति, गाँवों में सुविधाएँ, योग्य प्रशिक्षक और प्रतिभा के निष्पक्ष चयन की व्यवस्था विकसित करनी चाहिए। खिलाड़ियों को पोषण, चिकित्सा और आर्थिक सुरक्षा भी मिले। राष्ट्रमंडल खेलों की सफलता ने भारतीय खेलों की संभावनाएँ सामने रखीं; अब उन्हें निरंतर परिश्रम और सुविचारित नीति से साकार करना हमारा दायित्व है।

चरण 3: (ख) आदर्श निबंध: बाढ़ की विभीषिका बाढ़ की विभीषिका

जल जीवन का आधार है, किंतु यही जल जब अनियंत्रित होकर बस्तियों और खेतों में फैल जाता है, तो विनाश का कारण बनता है। बाढ़ केवल प्राकृतिक घटना नहीं रहती; वह लाखों लोगों के जीवन, आजीविका और भविष्य पर संकट बनकर आती है।

अत्यधिक वर्षा, नदियों का उफान और पहाड़ों से आने वाला तेज बहाव इसके प्रमुख कारण हैं। वनों की कटाई, जल-निकासी के मार्गों पर अतिक्रमण तथा अव्यवस्थित निर्माण स्थिति को और गंभीर बनाते हैं। नदी के किनारे बसे गाँवों में पानी घुसते ही घर टूटने लगते हैं, फसलें डूब जाती हैं और पशु बह जाते हैं। सड़कें तथा पुल क्षतिग्रस्त होने पर राहत पहुँचाना भी कठिन हो जाता है।

बाढ़ से सबसे अधिक कठिनाई बच्चों, वृद्धों और बीमार लोगों को होती है। परिवार सुरक्षित स्थानों पर पहुँच भी जाएँ, तो स्वच्छ पेयजल, भोजन, कपड़े और दवाओं की कमी बनी रहती है। दूषित पानी से बीमारियाँ फैलने का खतरा बढ़ता है। विद्यालय बंद होने से पढ़ाई बाधित होती है और गरीब परिवार कर्ज तथा बेरोज़गारी के चक्र में फँस सकते हैं। पानी उतर जाने के बाद भी पुनर्वास का काम लंबे समय तक चलता है।

इस संकट से निपटने के लिए केवल आपदा के बाद राहत बाँटना पर्याप्त नहीं है। समय पर चेतावनी, सुरक्षित निकासी, मजबूत आश्रय-स्थल और प्रशिक्षित बचाव-दल आवश्यक हैं। नदियों के प्राकृतिक मार्ग सुरक्षित रखना, जलग्रहण क्षेत्रों में वृक्ष लगाना तथा निर्माण-नियमों का पालन कराना भी जरूरी है। नागरिकों को अफवाहों से बचकर प्रशासन के निर्देश मानने चाहिए।

प्रकृति के साथ संतुलित व्यवहार और सजग प्रशासन बाढ़ की हानि घटा सकते हैं। संवेदनशील समाज का कर्तव्य है कि वह पीड़ितों को तत्काल सहायता के साथ सम्मानपूर्ण पुनर्वास का अवसर भी दे।

चरण 4: (ग) आदर्श निबंध: बेरोज़गारी की समस्या बेरोज़गारी की समस्या

जब काम करने की इच्छा और क्षमता रखने वाले व्यक्ति को उपयुक्त काम नहीं मिलता, तो यह स्थिति बेरोज़गारी कहलाती है। यह केवल आय के अभाव की समस्या नहीं है; इससे व्यक्ति का आत्मविश्वास, परिवार की स्थिरता और देश की प्रगति भी प्रभावित होती है।

रोज़गार के अवसरों की तुलना में काम चाहने वालों की संख्या अधिक होना इसका एक कारण है। शिक्षा और कार्यक्षेत्र की आवश्यकताओं के बीच दूरी भी समस्या बढ़ाती है। अनेक युवक डिग्री प्राप्त कर लेते हैं, किंतु उनके पास व्यावहारिक कौशल और प्रशिक्षण नहीं होता। कृषि पर अत्यधिक निर्भरता, मौसमी काम और छोटे उद्योगों की कठिनाइयाँ भी बेरोज़गारी को बढ़ाती हैं। केवल कुछ निश्चित नौकरियों को प्रतिष्ठित मानने की सामाजिक प्रवृत्ति अवसरों की समझ सीमित कर देती है।

बेरोज़गारी से आर्थिक असुरक्षा और मानसिक तनाव उत्पन्न होते हैं। परिवार शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण पर आवश्यक खर्च नहीं कर पाते। लंबे समय तक काम न मिलने से युवाओं में निराशा बढ़ सकती है। गाँवों से शहरों की ओर पलायन होता है, जिससे नगरों के आवास और सार्वजनिक सुविधाओं पर दबाव पड़ता है। प्रतिभा का पर्याप्त उपयोग न होना पूरे देश की क्षति है।

समाधान के लिए शिक्षा को व्यावहारिक जीवन से जोड़ना होगा। व्यावसायिक प्रशिक्षण, प्रशिक्षुता, तकनीकी कौशल और उद्यमिता को बढ़ावा मिलना चाहिए। कृषि आधारित उद्योग, हस्तशिल्प, सेवा-क्षेत्र और स्थानीय उत्पादन में रोज़गार बढ़ाए जा सकते हैं। छोटे उद्यमियों को उचित ऋण, मार्गदर्शन और बाज़ार मिले। भर्ती-प्रक्रियाएँ पारदर्शी हों और महिलाओं के लिए सुरक्षित कार्यस्थल उपलब्ध हों।

युवाओं को श्रम का सम्मान करते हुए अपनी योग्यता विकसित करनी चाहिए। सरकार, शिक्षण-संस्थान और उद्योग मिलकर अवसर बढ़ाएँ, तभी मानव-संसाधन राष्ट्र की वास्तविक शक्ति बन सकेगा।

चरण 5: (घ) आदर्श निबंध: मेरी प्रिय पुस्तक मेरी प्रिय पुस्तक

पुस्तकें मनुष्य की ऐसी साथी हैं जो अनुभव, विचार और संवेदना की नई दुनिया खोलती हैं। मेरी प्रिय पुस्तक मुंशी प्रेमचंद का उपन्यास 'गोदान' है। इसे पढ़ते हुए भारतीय ग्रामीण जीवन के संघर्ष और मानवीय संबंधों की जटिलता को समझने का अवसर मिलता है।

उपन्यास के केंद्र में किसान होरी और उसका परिवार है। होरी मेहनत करके सम्मान से जीना चाहता है, किंतु आर्थिक अभाव, कर्ज और सामाजिक दबाव उसे बार-बार कठिनाइयों में डालते हैं। गाय रखने की उसकी इच्छा सामान्य ग्रामीण आकांक्षा होते हुए भी जीवन के बड़े संघर्ष से जुड़ जाती है। उसकी पत्नी धनिया साहसी और व्यावहारिक है। वह अन्याय के सामने प्रश्न उठाती है तथा परिवार को सँभालने का प्रयास करती है।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता पात्रों की सहजता है। वे केवल अच्छे या बुरे नहीं हैं; उनमें कमजोरियाँ, आशाएँ और विरोधाभास भी हैं। प्रेमचंद गरीबी और शोषण दिखाते हुए भी मनुष्य की करुणा को जीवित रखते हैं। उनकी भाषा जीवन के निकट है, इसलिए कथानक के साथ पाठक का भावनात्मक संबंध बनता है। ग्रामीण और शहरी जीवन के प्रसंग समाज के व्यापक रूप को सामने लाते हैं।

'गोदान' मुझे इसलिए प्रिय है कि यह मनोरंजन के साथ विचार करने की प्रेरणा भी देता है। इससे मैंने सीखा कि किसी व्यक्ति की परिस्थिति जाने बिना उसके आचरण का निर्णय नहीं करना चाहिए। सामाजिक प्रतिष्ठा की कठोर धारणाएँ और आर्थिक असमानता साधारण परिवारों पर कितना बोझ डालती हैं, यह बात पुस्तक स्पष्ट करती है।

अच्छी पुस्तक वही है जो पढ़ने के बाद भी हमारी चेतना में बनी रहे। 'गोदान' मेरे लिए ऐसी ही कृति है। यह दूसरों के दुःख को समझने, अन्याय के प्रति सजग रहने और अधिक मानवीय बनने की प्रेरणा देती है।

चरण 6: निष्कर्ष चारों विषयों में स्पष्ट भूमिका, विषयानुकूल उदाहरण, क्रमबद्ध विवेचन और उद्देश्यपूर्ण उपसंहार दिया गया है। चुने हुए विषय पर इन्हीं गुणों के साथ स्वतंत्र, प्रवाहपूर्ण निबंध लिखा जा सकता है।

त्वरित सुझाव: विषय चुनते ही तीन मुख्य बिंदु लिख लें; प्रत्येक बिंदु को अलग अनुच्छेद में उदाहरण सहित विकसित करके अंत में अपना निष्कर्ष दें।

4. बद्रीनाथ से सपरिवार लौटते समय भूस्खलन के कारण आप और सैकड़ों यात्री मार्ग में फँस गए । सरकार का आपदा प्रबंधन विभाग निष्क्रिय रहा । इसकी शिकायत करते हुए एक पत्र आपदा-प्रबंधन मंत्री, उत्तराखंड सरकार, देहरादून को लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिकायत-पत्र में घटना, विभागीय कमी और अपेक्षित कार्रवाई स्पष्ट तथा शिष्ट भाषा में रखी जाती है। असंतोष के साथ व्यावहारिक सुझाव देना पत्र को प्रभावी बनाता है।
- औपचारिक पत्र का क्रम है: प्रेषक का पता, दिनांक, पदनाम सहित प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन, मुख्य कथ्य, समापन और हस्ताक्षर।

चरण 1: पत्र की रूपरेखा आपदा-प्रबंधन मंत्री को संबोधित पत्र में बद्रीनाथ से लौटते समय भूस्खलन में फँसने की घटना लिखें। सैकड़ों यात्रियों के लिए बचाव, भोजन, पानी और चिकित्सा की व्यवस्था न होने को शिकायत का आधार बनाएँ। अंत में राहत-व्यवस्था की समीक्षा, उत्तरदायित्व और भविष्य की तैयारियों का अनुरोध करें। नाम, पता और दिनांक आदर्श पत्र की पूर्ति के लिए दिए गए हैं।

चरण 2: पूरा आदर्श शिकायत-पत्र 24, शास्त्री नगर

मेरठ, उत्तर प्रदेश

दिनांक: 15 जून, 2011

सेवा में,

माननीय आपदा-प्रबंधन मंत्री

उत्तराखंड सरकार

देहरादून।

विषय: भूस्खलन के समय आपदा-प्रबंधन विभाग की निष्क्रियता के संबंध में शिकायत।

महोदय,

मैं आपके ध्यान में बद्रीनाथ यात्रा से लौट रहे यात्रियों को हुई गंभीर असुविधा लाना चाहता हूँ। गत सप्ताह मैं अपने परिवार के साथ बद्रीनाथ से लौट रहा था। मार्ग में भूस्खलन होने के कारण यातायात पूरी तरह रुक गया और हमारे साथ सैकड़ों यात्री रास्ते में फँस गए। पहाड़ से मलबा गिरने के कारण आगे बढ़ना असुरक्षित था और सुरक्षित ठहरने का स्थान भी उपलब्ध नहीं था।

इस संकट में आपदा-प्रबंधन विभाग की सहायता की आवश्यकता थी, किंतु लंबे समय तक न कोई बचाव-दल पहुँचा और न यात्रियों को स्थिति की विश्वसनीय जानकारी मिली। भोजन, स्वच्छ पानी, दवाओं तथा अस्थायी आश्रय की व्यवस्था नहीं थी। बच्चों, वृद्धों और बीमार यात्रियों को विशेष कठिनाई हुई। विभाग की निष्क्रियता ने प्राकृतिक आपदा से उत्पन्न संकट को और गंभीर बना दिया।

कृपया इस प्रकरण की जाँच कराकर संबंधित अधिकारियों का उत्तरदायित्व निर्धारित करें। संवेदनशील मार्गों पर राहत-दल, आवश्यक सामग्री, चिकित्सा-सहायता और संचार-सुविधा पहले से उपलब्ध कराई जाए। भूस्खलन की चेतावनी तथा मार्ग की स्थिति की सूचना यात्रियों को समय पर मिले। ऐसे अवसरों के लिए सुरक्षित आश्रय और वैकल्पिक निकासी की व्यवस्था भी आवश्यक है।

आशा है कि आप शिकायत पर शीघ्र कार्रवाई करके यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करेंगे और की गई कार्रवाई से अवगत कराएँगे।

भवदीय

अमित शर्मा

चरण 3: निष्कर्ष यह पत्र घटना, विभाग की निष्क्रियता, यात्रियों की कठिनाइयों और अपेक्षित सुधारों को औपचारिक तथा विनम्र भाषा में प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: शिकायत लिखते समय केवल नाराज़गी व्यक्त न करें; घटना का स्पष्ट विवरण देकर अंतिम अनुच्छेद में जाँच और ठोस सुधारों का अनुरोध अवश्य करें।

अथवा

4. कुछ राजनीतिक नेता नवयुवकों से कहते हैं कि वे सक्रिय राजनीति में शामिल हों । किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखकर इस विषय पर अपने विचार लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को लिखा गया पत्र किसी सार्वजनिक विषय पर लेखक का विचार और उपयोगी सुझाव प्रस्तुत करता है।
- युवा राजनीतिक भागीदारी का आधार लोकतांत्रिक जागरूकता, शिक्षा, नैतिकता और स्वतंत्र विवेक होना चाहिए।

चरण 1: पत्र का प्रारूप और विषय निर्धारित करना पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, संपादक का पद तथा समाचार-पत्र का पता, विषय, संबोधन, विचारपूर्ण मुख्य भाग और औपचारिक समापन आएँगे। विषय युवा वर्ग की सक्रिय राजनीति में भागीदारी है। भाषा शिष्ट, स्पष्ट और तर्कपूर्ण रखनी चाहिए। किसी दल का प्रचार करने के स्थान पर सार्वजनिक हित को केंद्र में रखना चाहिए।

चरण 2: विचारों की योजना बनाना लोकतंत्र में युवाओं की ऊर्जा और नए विचार आवश्यक हैं। साथ ही शिक्षा की उपेक्षा, हिंसा, अवसरवाद और राजनीतिक नेताओं द्वारा युवाओं के दुरुपयोग की आशंका पर विचार करना चाहिए। इसलिए भागीदारी का समर्थन विवेकपूर्ण तैयारी और नैतिक आचरण के साथ किया जाएगा। नेताओं से भी पारदर्शिता और युवाओं को वास्तविक अवसर देने की अपेक्षा व्यक्त की जाएगी।

चरण 3: पूर्ण आदर्श पत्र 24, शांति विहार
नई दिल्ली
18 मार्च, 2011
सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक जनवाणी,
नई दिल्ली।
विषय : सक्रिय राजनीति में नवयुवकों की भागीदारी।
महोदय,
आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं सक्रिय राजनीति में नवयुवकों के प्रवेश पर अपने विचार प्रस्तुत करना चाहता हूँ। अनेक राजनीतिक नेता युवाओं को राजनीति में आने का आह्वान कर रहे हैं। लोकतंत्र के भविष्य की दृष्टि से यह विषय महत्त्वपूर्ण है।
युवा समाज की परिवर्तनकारी शक्ति हैं। उनकी ऊर्जा, साहस और नई सोच राजनीति को जनसमस्याओं के प्रति अधिक संवेदनशील बना सकती है। बेरोजगारी, शिक्षा, पर्यावरण और सामाजिक समानता जैसे प्रश्नों पर उनकी भागीदारी आवश्यक है। राजनीति को केवल सत्ता प्राप्ति का साधन समझकर उससे दूर रहना भी उचित नहीं है।
परंतु युवाओं को भावनात्मक नारों या व्यक्तिगत स्वार्थ के आधार पर किसी दल का अनुयायी नहीं बनना चाहिए। पहले उन्हें संविधान, लोकतांत्रिक मूल्यों और स्थानीय समस्याओं की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। पढ़ाई की उपेक्षा, हिंसक आंदोलन और अंधभक्ति उनके भविष्य तथा समाज दोनों को हानि पहुँचा सकते हैं। छात्र जीवन में सामाजिक सेवा, रचनात्मक अभियानों और विचारपूर्ण संवाद से सार्वजनिक जीवन की तैयारी की जा सकती है।
राजनीतिक दलों का दायित्व है कि वे युवाओं को केवल भीड़ जुटाने का साधन न बनाएँ। उन्हें प्रशिक्षण, नेतृत्व के अवसर और निर्णय में उचित स्थान मिले। ईमानदारी, योग्यता और सेवा को परिवारवाद तथा धनबल से अधिक महत्त्व दिया जाए।
अत: मैं युवाओं की राजनीतिक भागीदारी का समर्थन करता हूँ, बशर्ते वह शिक्षा, स्वतंत्र चिंतन और जनसेवा पर आधारित हो। कृपया इस विषय पर सार्थक सार्वजनिक चर्चा को स्थान दें।
धन्यवाद।
भवदीय,
अमित कुमार

चरण 4: निष्कर्ष युवाओं को लोकतांत्रिक जानकारी, शिक्षा और नैतिक तैयारी के साथ राजनीति में भाग लेना चाहिए; पत्र इसी संतुलित विचार को औपचारिक प्रारूप में प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: पत्र में समर्थन का आधार, संभावित जोखिम और सुधार के ठोस सुझाव जोड़ें; विषय तथा समापन लिखना न भूलें।

5(क-i). 'स्टिंग ऑपरेशन' क्या होता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्टिंग ऑपरेशन खोजी पत्रकारिता की एक विधि है, जिसमें छिपे हुए अनुचित आचरण को प्रमाण सहित सामने लाया जाता है।

चरण 1: विधि पहचानना इसमें पत्रकार अपनी वास्तविक पहचान या जाँच का उद्देश्य छिपाकर सूचना जुटाता है। प्रायः गुप्त कैमरे अथवा रिकॉर्डिंग से घटना का साक्ष्य प्राप्त किया जाता है।

चरण 2: उद्देश्य स्पष्ट करना इसका उद्देश्य भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी अथवा दूसरे अनैतिक और गैरकानूनी कार्यों का पर्दाफाश करना है। केवल आरोप लगाना या सामान्य साक्षात्कार लेना स्टिंग ऑपरेशन नहीं कहलाता।

चरण 3: निष्कर्ष छिपे कैमरे या गुप्त रिकॉर्डिंग आदि से भ्रष्ट अथवा अनैतिक कार्यों का प्रमाण जुटाकर उनका पर्दाफाश करने की पत्रकारितागत कार्रवाई को स्टिंग ऑपरेशन कहते हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में गुप्त जाँच, प्रमाण और पर्दाफाश—इन तीन बातों को जोड़कर उत्तर स्पष्ट करें।

5(क-ii). 'फ्रीलांस पत्रकार' किसे कहते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ्रीलांस पत्रकार स्वतंत्र रूप से कार्य करता है और किसी एक समाचार-संस्था का नियमित वेतनभोगी कर्मचारी नहीं होता।

चरण 1: नियुक्ति का स्वरूप पहचानना फ्रीलांस पत्रकार किसी एक समाचार-पत्र या संस्था से स्थायी नौकरी के रूप में नहीं बँधा होता। वह अपनी स्वतंत्रता बनाए रखते हुए पत्रकारिता का काम करता है।

चरण 2: काम और पारिश्रमिक बताना वह विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं अथवा समाचार माध्यमों को समाचार, लेख, रिपोर्ट या अन्य सामग्री उपलब्ध कराता है। उसे सामान्यतः स्वीकृत सामग्री अथवा किए गए काम के अनुसार पारिश्रमिक मिलता है।

चरण 3: निष्कर्ष किसी एक समाचार-संस्था की नियमित नौकरी से बँधे बिना विभिन्न संस्थाओं के लिए स्वतंत्र रूप से सामग्री तैयार करने वाला पत्रकार फ्रीलांस पत्रकार कहलाता है।

त्वरित सुझाव: फ्रीलांस का अर्थ स्वतंत्र पत्रकार है; इसे किसी एक संस्थान के नियमित वेतनभोगी पत्रकार से अलग पहचानें।

5(क-iii). अख़बारी भाषा की चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अख़बार व्यापक पाठक-वर्ग तक सूचना पहुँचाता है, इसलिए उसकी भाषा सरल, स्पष्ट, संक्षिप्त और सहज बोधगम्य होनी चाहिए।

चरण 1: पहली दो विशेषताएँ 1. सरलता : भाषा में आम बोलचाल के प्रचलित शब्द हों, ताकि सामान्य पाठक भी अर्थ समझ सके।

2. स्पष्टता : कथन का अर्थ निश्चित हो; अस्पष्ट और उलझे हुए वाक्यों से बचा जाए।

चरण 2: शेष दो विशेषताएँ 3. संक्षिप्तता : कम शब्दों और छोटे वाक्यों में आवश्यक बात कही जाए तथा अनावश्यक विस्तार न हो।

4. सहज बोधगम्यता : समाचार का आशय पढ़ते ही समझ में आए; कठिन पारिभाषिक शब्दों और जटिल अभिव्यक्तियों का अनावश्यक प्रयोग न हो।

चरण 3: निष्कर्ष अख़बारी भाषा की चार प्रमुख विशेषताएँ हैं—सरलता, स्पष्टता, संक्षिप्तता और सहज बोधगम्यता।

त्वरित सुझाव: चार विशेषताओं को क्रमांक देकर लिखें और भाषा की विशेषताओं को समाचार की विषयवस्तु से अलग रखें।

5(क-iv). रेडियो की अपेक्षा टी.वी. अधिक लोकप्रिय माध्यम क्यों है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है, जबकि टेलीविजन दृश्य और श्रव्य दोनों माध्यमों की शक्ति को एक साथ उपयोग करता है।

चरण 1: दोनों माध्यमों की तुलना करना रेडियो पर श्रोता केवल आवाज सुनता है और दृश्य की कल्पना करता है। टेलीविजन पर दर्शक घटना के चित्र देखने के साथ उससे संबंधित ध्वनि और विवरण भी सुनता है।

चरण 2: लोकप्रियता का कारण बताना चित्र और ध्वनि का संयुक्त प्रभाव प्रस्तुति को सजीव, आकर्षक तथा आसानी से समझ में आने वाला बनाता है। घटनाओं का सीधा प्रसारण दर्शक को घटना से जुड़ने का अनुभव देता है और व्यापक दर्शक-वर्ग को आकर्षित करता है।

चरण 3: निष्कर्ष टी.वी. पर घटनाओं को देखने और सुनने की सुविधा एक साथ मिलती है; इसलिए उसकी प्रस्तुति अधिक सजीव, आकर्षक और प्रभावशाली होती है तथा वह रेडियो की अपेक्षा अधिक लोकप्रिय है।

त्वरित सुझाव: उत्तर का मुख्य आधार दृश्य और ध्वनि का संयुक्त प्रभाव रखें; केवल मनोरंजन की सुविधा लिखकर न रुकें।

5(क-v). किन्हीं चार हिन्दी समाचार-पत्रों का उल्लेख कीजिए जिनके वेब-संस्करण उपलब्ध हैं । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार-पत्र का वेब-संस्करण उसका इंटरनेट पर उपलब्ध रूप होता है, जिसके माध्यम से पाठक समाचार पढ़ सकता है।

चरण 1: प्रश्न की अपेक्षा पहचानना यहाँ ऐसे चार हिन्दी समाचार-पत्रों के नाम देने हैं जो अपने समाचार इंटरनेट पर भी उपलब्ध कराते हैं। टेलीविजन चैनल, खोज इंजन या केवल पत्रिका का नाम देना इस माँग को पूरा नहीं करता।

चरण 2: चार उपयुक्त नाम लिखना 1. दैनिक जागरण।

2. दैनिक भास्कर।

3. अमर उजाला।

4. नवभारत टाइम्स।

ये चारों हिन्दी समाचार-पत्र हैं और इनके वेब-संस्करण उपलब्ध हैं। उत्तर में इनके नाम स्पष्ट रूप से अलग-अलग लिखना पर्याप्त है।

चरण 3: निष्कर्ष दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, अमर उजाला और नवभारत टाइम्स—इन चार हिन्दी समाचार-पत्रों के वेब-संस्करण उपलब्ध हैं।

त्वरित सुझाव: चार पूरे समाचार-पत्रों के नाम याद रखें; समाचार चैनल या इंटरनेट सेवा का नाम उनके स्थान पर न लिखें।

5(ख). 'पल्स पोलियो अभियान' अथवा 'फ़िल्मों में हिंसा' विषय पर एक रिपोर्ट का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रिपोर्ट में घटना या अभियान का तथ्यपरक विवरण दिया जाता है। शीर्षक, स्थान, दिनांक, संवाददाता और मुख्य विवरण उसके आवश्यक अंग हैं।
- प्रश्न के दोनों वैकल्पिक विषयों के नमूने नीचे दिए गए हैं। ये अभ्यास के लिए तैयार किए गए आदर्श प्रारूप हैं; परीक्षा में किसी एक विषय का चयन किया जा सकता है।

चरण 1: प्रारूप और सामग्री की योजना पहले विषय के अनुरूप स्पष्ट शीर्षक दें। फिर स्थान, दिनांक और रिपोर्टकर्ता का उल्लेख करें। आरंभ में मुख्य घटना, बीच में आयोजन या समस्या का विवरण तथा अंत में परिणाम अथवा संबंधित लोगों की प्रतिक्रिया दें। पोलियो अभियान की रिपोर्ट में बूथ, स्वास्थ्यकर्मी, लाभार्थी और जनजागरण आएँगे। फ़िल्मों में हिंसा की रिपोर्ट में परिचर्चा, वक्ताओं के विचार और निष्कर्ष आएँगे। व्यक्तिगत भावुकता के स्थान पर सूचनापरक भाषा रखें।

चरण 2: पहला विकल्प : पल्स पोलियो अभियान **बच्चों की सुरक्षा के लिए चला पल्स पोलियो अभियान**

नई दिल्ली, 6 मार्च। विशेष संवाददाता।

रविवार को नगर के स्वास्थ्य केंद्रों और विभिन्न बस्तियों में पल्स पोलियो अभियान चलाया गया। पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाने के लिए स्वास्थ्य विभाग ने विशेष बूथ बनाए। विद्यालयों, बस अड्डों और सार्वजनिक स्थलों पर भी टीकाकरण दल तैनात रहे।

अभियान शुरू होने से पहले स्वयंसेवकों ने घर-घर जाकर अभिभावकों को बूथों की जानकारी दी। स्वास्थ्यकर्मियों ने समझाया कि बच्चे को नियमित टीकाकरण के साथ अभियान की खुराक दिलाना भी आवश्यक है। बूथ पर आए बच्चों का विवरण दर्ज किया गया और अभिभावकों की शंकाओं का समाधान किया गया।

किसी कारण बूथ तक न पहुँच पाने वाले बच्चों की पहचान के लिए घर-घर संपर्क की व्यवस्था की गई। स्थानीय युवाओं और शिक्षकों ने भी सहयोग दिया। स्वास्थ्य विभाग ने परिवारों से आग्रह किया कि कोई पात्र बच्चा खुराक से वंचित न रहे।

चरण 3: दूसरा विकल्प : फ़िल्मों में हिंसा **फ़िल्मों में बढ़ती हिंसा पर परिचर्चा**

नई दिल्ली, 7 मार्च। विशेष संवाददाता।

स्थानीय सामुदायिक केंद्र में सोमवार को 'फ़िल्मों में हिंसा' विषय पर परिचर्चा आयोजित की गई। इसमें शिक्षकों, अभिभावकों, विद्यार्थियों और फ़िल्म समीक्षकों ने भाग लिया। चर्चा का केंद्र फ़िल्मों में दिखाई जाने वाली हिंसा तथा दर्शकों, विशेषकर बच्चों, पर उसका संभावित प्रभाव रहा।

वक्ताओं ने कहा कि अपराध को आकर्षक बनाकर प्रस्तुत करने और हिंसक पात्र को आदर्श की तरह दिखाने से संवेदनशील दर्शकों में गलत धारणाएँ बन सकती हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि किसी सामाजिक समस्या को समझाने के लिए दिखाई गई हिंसा और केवल मनोरंजन के लिए परोसी गई हिंसा में अंतर है।

प्रतिभागियों ने निर्माताओं से जिम्मेदार प्रस्तुति और अभिभावकों से बच्चों के साथ संवाद की अपील की। आयु के अनुकूल फ़िल्म चुनने तथा दृश्य देखने के बाद उनके संदर्भ पर चर्चा करने का सुझाव भी दिया गया। परिचर्चा का समापन मनोरंजन के साथ सामाजिक संवेदनशीलता बनाए रखने के आग्रह से हुआ।

चरण 4: निष्कर्ष दोनों नमूनों में शीर्षक और स्थान-दिनांक के बाद घटना का क्रमबद्ध, वस्तुनिष्ठ विवरण है। चुने हुए विषय पर इसी रिपोर्ट-प्रारूप में आलेख लिखा जाना चाहिए।

त्वरित सुझाव: रिपोर्ट में पहले मुख्य घटना बताएँ; उसके बाद आयोजन, सहभागिता और परिणाम को अलग अनुच्छेदों में रखें।

6. 'डॉक्टरों की हड़ताल' अथवा 'डेंगू का प्रकोप' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी घटना या समस्या के मानवीय पक्ष को रोचक ढंग से सामने लाता है। इसमें आकर्षक शीर्षक, संवेदनशील आरंभ, समस्या का विस्तार और विचारोत्तेजक समापन होता है।
- नीचे दोनों विकल्पों के स्वतंत्र मॉडल आलेख हैं। फ़ीचर की भाषा चित्रात्मक है, पर उसमें बिना आधार आँकड़े या विशेषज्ञों के कथन नहीं गढ़े गए हैं।

चरण 1: आलेख की रूपरेखा डॉक्टरों की हड़ताल वाले फ़ीचर में अस्पताल की स्थिति से आरंभ करके रोगियों की परेशानी, चिकित्सकों की कामकाजी स्थितियों और समाधान की आवश्यकता तक पहुँचना है। डेंगू वाले फ़ीचर में घरों के पास जमा पानी से जुड़ी लापरवाही, परिवार की चिंता और सामूहिक रोकथाम को केंद्र में रखना है। शीर्षक के नीचे लेखक का नाम दें। समाचार की तरह केवल घटना गिनाने के बजाय उसके पीछे की मानवीय चिंता उभारें।

चरण 2: पहला विकल्प : डॉक्टरों की हड़ताल **इलाज की प्रतीक्षा में ठहरा समय**

लेखक : अजय

अस्पताल के बाहर बैठी माँ बार-बार बच्चे का माथा छूती है। पर्ची हाथ में है, पर उसकी आँखों में एक ही प्रश्न है—डॉक्टर कब मिलेंगे? डॉक्टरों की हड़ताल में सबसे लंबा होता है रोगी की प्रतीक्षा का समय। दूर से आए परिवार के लिए हर बीतता घंटा चिंता और खर्च बढ़ाता है।

चिकित्सा सेवा से जुड़े लोग भी कठिन परिस्थितियों में काम करते हैं। अत्यधिक कार्यभार, सुरक्षा की चिंता और सुविधाओं की कमी जैसी समस्याओं को सुनना आवश्यक है। जब संवाद रुकता है, तो असंतोष हड़ताल का रूप ले सकता है। लेकिन रोगी ऐसे विवाद का पक्षकार नहीं होता; फिर भी उसका स्वास्थ्य प्रभावित होता है।

इसलिए समाधान टकराव को लंबा खींचने में नहीं, समय पर सार्थक बातचीत में है। आपातकालीन सेवाओं की व्यवस्था बनी रहे और जरूरतमंदों को सहायता की स्पष्ट जानकारी मिले। प्रशासन तथा चिकित्सकों को मिलकर ऐसा रास्ता निकालना चाहिए जिसमें कर्मचारियों की उचित समस्याएँ भी सुनी जाएँ और इलाज की आस लेकर आया व्यक्ति असहाय न लौटे। अस्पताल की पहचान अंततः बंद दरवाजों से नहीं, जीवन बचाने वाले भरोसे से बनती है।

चरण 3: दूसरा विकल्प : डेंगू का प्रकोप **नन्हा मच्छर, बड़ी चिंता**

लेखक : अजय

छत पर पड़ा टूटा गमला, बरसात का बचा पानी और कई दिनों से उपेक्षित कूलर—हमारी नजर में छोटी लगने वाली चीजें डेंगू फैलाने वाले मच्छरों के पनपने की जगह बन सकती हैं। जब घर का कोई सदस्य बुखार से बिस्तर पर पड़ता है, तभी आसपास की यह अनदेखी एक बड़ी चिंता बनकर सामने आती है।

डेंगू का प्रकोप केवल अस्पताल की समस्या नहीं है। वह हमारी बस्ती, आँगन और दैनिक आदतों से भी जुड़ा है। एक परिवार अपने घर को साफ रखे, लेकिन पड़ोस में पानी जमा रहे, तो सामूहिक सुरक्षा अधूरी रह जाती है। इसलिए जिम्मेदारी का घेरा घर की दीवारों से आगे बढ़ना चाहिए।

कूलरों और पानी के बर्तनों की नियमित सफाई, अनावश्यक जलभराव हटाना तथा पानी के भंडार ढककर रखना उपयोगी सावधानियाँ हैं। बुखार होने पर चिकित्सकीय सलाह लेना जरूरी है; अफवाहों और अपने मन से दवा लेने से बचना चाहिए। नगर निकाय की सफाई व्यवस्था और नागरिकों का सहयोग एक-दूसरे के पूरक हैं। डेंगू से संघर्ष का आरंभ किसी बड़े अभियान की प्रतीक्षा से नहीं, अपने आसपास जमा पानी पर आज ही नजर डालने से हो सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष दोनों फ़ीचर विषय की मानवीय चिंता को दृश्यात्मक आरंभ, विवेचन और सार्थक समापन के साथ व्यक्त करते हैं। इनमें से किसी एक विषय पर पूरा आलेख लिखा जा सकता है।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर का आरंभ किसी प्रभावी दृश्य से करें और अंतिम अनुच्छेद को उसी समस्या के समाधान या सार्थक विचार से जोड़ें।

7(क). बच्चे प्रत्याशा में होंगे, नीड़ों से झाँक रहे होंगे — यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है ! दिन जल्दी-जल्दी ढलता है ! मुझसे मिलने को कौन विकल ? मैं होऊँ किसके हित चंचल ? यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है । दिन जल्दी-जल्दी ढलता है ! 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' की आवृत्ति से कविता के अर्थ में क्या विशेषता आई है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी पंक्ति की आवृत्ति कविता में लय उत्पन्न करने के साथ उसके केंद्रीय भाव को गहरा करती है। उसका अर्थ आसपास की पंक्तियों और वक्ता की मन:स्थिति से समझना चाहिए।
- यहाँ एक ही ढलती संध्या चिड़ियों की मिलन-उत्कंठा और कवि की अकेलेपन से उपजी विह्वलता को अलग-अलग ढंग से तीव्र करती है।

चरण 1: चिड़ियों की स्थिति से आवृत्ति का संबंध पहली स्थिति में चिड़ियों को ध्यान आता है कि उनके बच्चे घोंसलों में प्रतीक्षा कर रहे होंगे। दिन तेजी से ढल रहा है, इसलिए बच्चों तक पहुँचने की व्यग्रता उनके पंखों में चंचलता भर देती है। आवृत्ति यहाँ समय के तेजी से बीतने और प्रियजनों से मिलने की अधीरता को उभारती है।

चरण 2: कवि की स्थिति में अर्थ का विस्तार दूसरी स्थिति में कवि पूछता है कि उससे मिलने को कौन व्याकुल है और वह किसके लिए जल्दी करे। किसी प्रतीक्षारत प्रियजन के अभाव का विचार उसके कदम शिथिल कर देता है। वही आवृत्ति अब अकेलेपन, विषाद और हृदय की विह्वलता को गहराती है। इस प्रकार एक ही पंक्ति दो विपरीत मन:स्थितियों को जोड़ती है और समय की तीव्र गति का बोध भी बनाए रखती है।

चरण 3: निष्कर्ष 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' की आवृत्ति से कविता में लय और समय की शीघ्रता का बोध आया है। चिड़ियों के संदर्भ में यह मिलन की उत्कंठा, जबकि कवि के संदर्भ में अकेलापन और विह्वलता तीव्र करती है।

त्वरित सुझाव: आवृत्ति का प्रभाव बताते समय केवल लय न लिखें; चिड़ियों की उत्सुकता और कवि की उदासी का अंतर भी स्पष्ट करें।

7(ख). दिन ढलते ही पक्षी नीड़ों को क्यों लौट आते हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पक्षियों का अपने बच्चों के प्रति वात्सल्य उनकी घर वापसी का प्रमुख कारण है।
- नीड़ पक्षियों का आश्रय है; वहाँ उनके बच्चे माता-पिता की प्रतीक्षा करते हैं।

चरण 1: प्रतीक्षा का कारण समझें दिन ढलने पर पक्षियों को अपने बच्चों का ध्यान आता है। बच्चे नीड़ों में बैठे बाहर झाँक रहे होंगे और भोजन लाने वाले माता-पिता के लौटने की राह देख रहे होंगे। यह कल्पना पक्षियों के मन में ममता और अपने बच्चों से मिलने की तीव्र इच्छा उत्पन्न करती है।

चरण 2: वापसी की गति से भाव जोड़ें बच्चों की प्रतीक्षा का ध्यान पक्षियों के पंखों में चंचलता भर देता है। संध्या होने के साथ वे शीघ्र अपने आश्रय तक पहुँचना चाहते हैं, ताकि बच्चों के पास लौट सकें। इस प्रकार उनका लौटना केवल रात से बचने की क्रिया नहीं, बल्कि बच्चों के प्रति स्नेह और उनसे मिलने की आतुरता का परिणाम है।

चरण 3: निष्कर्ष दिन ढलते ही पक्षी अपने प्रतीक्षारत बच्चों से मिलने और उनके पास पहुँचने के लिए नीड़ों को लौट आते हैं। बच्चों के प्रति ममता उनके लौटने की गति बढ़ा देती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में नीड़, प्रतीक्षारत बच्चे और वात्सल्य को आपस में जोड़कर पक्षियों की शीघ्र वापसी का कारण स्पष्ट करें।

7(ग). पहले और दूसरे पद की स्थितियों में क्या अंतर है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में पक्षियों के उत्साह और अकेले पथिक की उदासी का विरोध उभरता है।
- किसी प्रिय के मिलने की आशा गति बढ़ाती है; उसके अभाव से उत्साह घटता है।

चरण 1: पहले पद की स्थिति बताएँ पहले पद में पक्षियों के बच्चे नीड़ों से बाहर झाँकते हुए माता-पिता की प्रतीक्षा कर रहे हैं। बच्चों का ध्यान पक्षियों के पंखों में चंचलता भर देता है। यहाँ घर पहुँचने की व्याकुलता, पारिवारिक अपनापन और मिलन की आशा से उत्पन्न उत्साह है।

चरण 2: दूसरे पद से तुलना करें दूसरे पद में पथिक स्वयं से पूछता है कि उससे मिलने को कौन व्याकुल है और वह किसके लिए चंचल हो। उसे अपने लिए किसी प्रतीक्षारत प्रिय का अनुभव नहीं होता। यह प्रश्न उसके कदमों को शिथिल करता है और उसके हृदय में व्याकुलता भर देता है। पक्षियों की गति जहाँ मिलन की आशा से तेज होती है, वहीं पथिक की गति अकेलेपन के कारण धीमी पड़ती है।

चरण 3: निष्कर्ष पहले पद में बच्चों से मिलने को उत्सुक पक्षियों की चंचलता है; दूसरे में किसी प्रतीक्षारत प्रिय के अभाव से पथिक की उदासी और शिथिलता है।

त्वरित सुझाव: दोनों पदों की तुलना करते समय पक्षियों के पंखों की चंचलता के सामने पथिक के शिथिल कदम रखें।

7(घ). पथिक में घर लौटने के लिए विशेष उत्साह क्यों नहीं है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पथिक के आत्मप्रश्न उसकी भावनात्मक रिक्तता को व्यक्त करते हैं।
- घर लौटने का उत्साह प्रियजनों के स्नेह और प्रतीक्षा से जुड़ा होता है।

चरण 1: पथिक का प्रश्न समझें पथिक सोचता है कि उससे मिलने को कौन व्याकुल है और वह किसके लिए जल्दी करे। उसके मन में किसी ऐसे आत्मीय व्यक्ति की छवि नहीं उभरती जो घर पर उसकी प्रतीक्षा कर रहा हो। अतः उसे घर लौटने में मिलन का वह आकर्षण अनुभव नहीं होता जो पक्षियों को अपने बच्चों के पास खींचता है।

चरण 2: मनोभाव का परिणाम बताएँ प्रतीक्षारत प्रिय के अभाव का यह बोध पथिक को अकेलेपन और उदासी से भर देता है। उसके कदम शिथिल हो जाते हैं और हृदय में व्याकुलता बढ़ती है। दिन तेजी से ढल रहा है, फिर भी उसके भीतर घर पहुँचने की विशेष चंचलता नहीं आती, क्योंकि शीघ्र लौटने को प्रेरित करने वाला आत्मीय संबंध उसे अनुभव नहीं हो रहा है।

चरण 3: निष्कर्ष पथिक को लगता है कि घर पर कोई प्रिय उसकी प्रतीक्षा नहीं कर रहा। इसी अकेलेपन और मिलन की आशा के अभाव से उसमें घर लौटने का विशेष उत्साह नहीं है।

त्वरित सुझाव: पथिक की उत्साहहीनता का कारण थकान बताने के बजाय उसके आत्मप्रश्न और प्रतीक्षारत प्रिय के अभाव से समझाएँ।

अथवा

7(क). यह तेरी रण-तरी भरी आकांक्षाओं से, घन, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर उर में पृथ्वी के, आशाओं से नवजीवन की, ऊँचा कर सिर, ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल ! बादल को 'विप्लव के बादल' क्यों कहा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला के काव्यांश में बादल परिवर्तन और नवजीवन की आशा का प्रतीक है।
- विप्लव का अर्थ क्रांति है; गर्जना जागरण और वर्षा नई सृष्टि की संभावना व्यक्त करती है।

चरण 1: बादल की गर्जना का अर्थ खोलें बादल की गर्जना युद्ध की भेरी जैसी सुनाई देती है। वह धरती के भीतर सोए हुए अंकुरों को सजग करती है। यह जागरण निष्क्रियता से सक्रियता की ओर बढ़ने का संकेत है। कवि बादल की इस शक्ति में जड़ता और पुराने शोषणपूर्ण ढाँचे को बदलने वाली क्रांतिकारी चेतना देखता है।

चरण 2: नवजीवन की आशा से जोड़ें अंकुर अपना सिर उठाकर बादल को देखते हैं, क्योंकि उससे उन्हें नए जीवन की आशा है। इसी प्रकार पीड़ित और साधनहीन जन परिवर्तन से बेहतर जीवन की संभावना देखते हैं। बादल की गर्जना केवल प्राकृतिक ध्वनि नहीं रहती; वह नई व्यवस्था, जागरण और जीवनदायी परिवर्तन का आह्वान बन जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष बादल को विप्लव का बादल कहा गया है क्योंकि वह अपनी गर्जना से सुप्त चेतना को जगाता है और शोषित जनों में परिवर्तन तथा नवजीवन की आशा भरता है।

त्वरित सुझाव: विप्लव का अर्थ स्पष्ट करके गर्जना को जागरण और अंकुरों की आशा को नए जीवन की संभावना से जोड़ें।

7(ख). 'रणतरी' किसे कहा है ? वह किन आकांक्षाओं से भरी है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रणतरी युद्ध की नाव है; कविता में यह बादल का रूपक बनकर आती है।
- बादल में संचित वर्षा और उसकी गर्जना को क्रांतिकारी शक्ति के रूप में देखा गया है।

चरण 1: रणतरी की पहचान करें कवि ने बादल को रणतरी कहा है। जिस प्रकार युद्ध की नाव संघर्ष के लिए आगे बढ़ती है, उसी प्रकार बादल गर्जना करते हुए परिवर्तन की शक्ति लेकर आता है। इस रूपक से बादल का गतिशील, संघर्षशील और परिवर्तनकारी स्वरूप स्पष्ट होता है। यह सामान्य नौका का वर्णन नहीं, बादल के क्रांतिकारी रूप की कल्पना है।

चरण 2: आकांक्षाओं का आशय बताएँ यह रणतरी नवजीवन और परिवर्तन की आकांक्षाओं से भरी है। धरती के भीतर सोए अंकुर वर्षा पाकर जागना, बढ़ना और जीवन प्राप्त करना चाहते हैं। व्यापक अर्थ में पीड़ित जन भी शोषण से मुक्ति तथा बेहतर जीवन की आशा रखते हैं। बादल उन आकांक्षाओं को पूरा करने वाली जीवनदायी और जागरणकारी शक्ति का प्रतीक है।

चरण 3: निष्कर्ष बादल को रणतरी अर्थात युद्ध की नाव कहा गया है। वह नवजीवन, जागरण, परिवर्तन और पीड़ित जन की मुक्ति की आकांक्षाओं से भरी है।

त्वरित सुझाव: पहले रणतरी का शाब्दिक अर्थ और उसका प्रतीक बताएँ, फिर अंकुरों तथा पीड़ित जन की नवजीवन की आशा लिखें।

7(ग). 'भेरी-गर्जन' क्या है ? उसका क्या प्रभाव पड़ा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भेरी युद्ध के समय बजाया जाने वाला वाद्य है; बादल की गर्जना उससे तुलनीय है।
- काव्य में ध्वनि के माध्यम से जागरण, उत्साह और नवजीवन की आशा व्यक्त होती है।

चरण 1: ध्वनि का अभिप्राय समझें भेरी-गर्जन से आशय बादल की उस प्रचंड गर्जना से है जो युद्ध की भेरी जैसी सुनाई देती है। भेरी की ध्वनि जैसे संघर्ष के लिए सजग करती है, वैसे ही बादल की गर्जना भी जागरण का आह्वान करती है। इसलिए यह पद बादल के क्रांतिकारी और ऊर्जावान रूप को सामने लाता है।

चरण 2: अंकुरों पर प्रभाव बताएँ बादल की गर्जना सुनकर पृथ्वी के हृदय में सोए हुए अंकुर सजग हो उठते हैं। उनमें वर्षा के सहारे नया जीवन पाने की आशा जागती है और वे सिर ऊँचा करके बादल को ताकने लगते हैं। प्रतीक रूप में यह पीड़ित जनों में परिवर्तन के प्रति आशा और चेतना का जागना है। इस प्रकार गर्जना सुप्त जीवन को सक्रियता और उत्साह देती है।

चरण 3: निष्कर्ष भेरी-गर्जन बादल की युद्ध की भेरी जैसी गर्जना है। उससे पृथ्वी के सुप्त अंकुर जाग उठे हैं और नवजीवन की आशा में सिर उठाकर बादल को देखने लगे हैं।

त्वरित सुझाव: भेरी का अर्थ बताने के बाद प्रभाव के क्रम को लिखें: सुप्त अंकुरों का सजग होना, आशा जगना और सिर उठाना।

7(घ). क्रांति की कामना कौन कर रहे हैं ? क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शोषित वर्ग की मुक्ति की आकांक्षा को कविता के बिंबों के माध्यम से समझना।
- प्रश्न के निर्देश के अनुरूप पाठ-साक्ष्य देकर संक्षिप्त और स्पष्ट उत्तर प्रस्तुत करना।

चरण 1: सुप्त अंकुरों की पहचान कविता में धरती के भीतर छिपे सुप्त अंकुर क्रांति की कामना कर रहे हैं। ये अंकुर समाज के शोषित, पीड़ित और उपेक्षित जनों के प्रतीक हैं। वे बादल की ओर आशा से देखते हैं, क्योंकि उसकी गर्जना में उन्हें परिवर्तन और नए जीवन का संदेश सुनाई देता है।

चरण 2: क्रांति की आवश्यकता ये लोग अभाव और शोषण की व्यवस्था से मुक्त होकर सम्मानपूर्ण जीवन पाना चाहते हैं। जैसे वर्षा अंकुरों को धरती से बाहर निकलने और बढ़ने का अवसर देती है, वैसे ही क्रांति शोषितों को आगे बढ़ने का अवसर देगी। इसीलिए बादल उनके लिए भय का नहीं, आशा और नवजीवन का प्रतीक है।

चरण 3: निष्कर्ष क्रांति की कामना शोषित-पीड़ित जन कर रहे हैं, क्योंकि वे शोषण से मुक्ति और नए, सम्मानपूर्ण जीवन की आशा रखते हैं।

त्वरित सुझाव: सुप्त अंकुरों को शोषित जनता का प्रतीक मानकर आशा और नवजीवन से उत्तर जोड़ें।

8(क). प्रभु प्रलाप सुनि कान, विकल भए वानर निकर । आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना महँ वीर रस ॥ छंद का नाम और उसकी पहचान (लक्षण) बताइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मात्रिक छंद की पहचान चरणों की मात्रा-व्यवस्था और तुक के आधार पर होती है।

- प्रश्न के निर्देश के अनुरूप पाठ-साक्ष्य देकर संक्षिप्त और स्पष्ट उत्तर प्रस्तुत करना।

चरण 1: छंद का नाम प्रस्तुत पंक्तियों में सोरठा छंद है। इसमें चार चरण होते हैं। चरण-विभाजन इस प्रकार है: 'प्रभु प्रलाप सुनि कान' / 'विकल भए वानर निकर' / 'आइ गयउ हनुमान' / 'जिमि करुना महँ वीर रस'। केवल दो मुद्रित पंक्तियाँ देखकर चरणों की संख्या दो नहीं माननी चाहिए।

चरण 2: मात्रा और तुक का लक्षण सोरठा एक प्रसिद्ध मात्रिक अर्धसम छंद है। इसके पहले और तीसरे चरण में 11-11 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं। तुक पहले और तीसरे चरण के अंत में मिलती है; यहाँ 'कान' तथा 'हनुमान' उस तुक को स्पष्ट करते हैं। यह मात्रा-क्रम दोहे के 13-11 क्रम के उलट है।

चरण 3: निष्कर्ष छंद सोरठा है; इसकी पहचान 11-13, 11-13 की मात्रा-व्यवस्था और पहले-तीसरे चरण की तुक है।

त्वरित सुझाव: सोरठे के लिए पहले 11 फिर 13 याद रखें और कान-हनुमान की तुक पहचानें।

8(ख). काव्यांश की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश की भाषा और उसकी भाव-अभिव्यक्ति की विशेषताएँ उदाहरण सहित पहचानना।
- प्रश्न के निर्देश के अनुरूप पाठ-साक्ष्य देकर संक्षिप्त और स्पष्ट उत्तर प्रस्तुत करना।

चरण 1: अवधी की सहजता इस काव्यांश की पहली विशेषता सरल, प्रवाहमयी अवधी भाषा है। 'सुनि', 'भए', 'गयउ', 'जिमि' और 'महँ' जैसे शब्द अवधी के रूप हैं। ये शब्द प्रसंग को सहज और आत्मीय बनाते हैं। इनके साथ 'प्रलाप', 'करुना' और 'वीर रस' जैसे काव्यपरक शब्द भी स्वाभाविक रूप से जुड़े हैं।

चरण 2: भावानुकूल और चित्रात्मक भाषा दूसरी विशेषता भावानुकूल चित्रात्मक अभिव्यक्ति है। 'विकल भए वानर निकर' से राम का विलाप सुनकर व्याकुल हुए वानरों का दृश्य उभरता है। 'जिमि करुना महँ वीर रस' हनुमान के आगमन से निराशा के बीच पैदा हुए उत्साह को मूर्त कर देता है। संक्षिप्त शब्दों में करुणा और वीरता का यह मेल भाषा को प्रभावपूर्ण बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष भाषा की दो प्रमुख विशेषताएँ हैं—सरल, प्रवाहमयी अवधी तथा भावानुकूल, चित्रात्मक अभिव्यक्ति।

त्वरित सुझाव: हर भाषागत विशेषता के साथ काव्यांश से एक शब्द या पद अवश्य जोड़ें।

8(ग). उत्प्रेक्षा अलंकार का उदाहरण चुनकर उसका सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्प्रेक्षा में उपमेय में उपमान की संभावना की जाती है; संभावना-सूचक शब्द पहचानना आवश्यक है।
- प्रश्न के निर्देश के अनुरूप पाठ-साक्ष्य देकर संक्षिप्त और स्पष्ट उत्तर प्रस्तुत करना।

चरण 1: उदाहरण और पहचान उत्प्रेक्षा का उदाहरण है—'आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना महँ वीर रस'। यहाँ हनुमान के आगमन में मानो करुण रस के बीच वीर रस के प्रकट होने की संभावना की गई है। 'जिमि' इस कल्पना को व्यक्त करता है। हनुमान का आगमन उपमेय और करुणा के बीच वीर रस का प्रकट होना उपमान है।

चरण 2: अलंकार का सौंदर्य लक्ष्मण की मूर्च्छा पर राम विलाप कर रहे हैं और वानर भी व्याकुल हैं। ऐसे करुण वातावरण में हनुमान का पहुँचना आशा और उत्साह का संचार करता है। कवि ने इस भाव-परिवर्तन को रसों के सजीव मिलन के रूप में प्रस्तुत किया है। इससे हनुमान की वीरता और उनके आगमन से मिली सांत्वना एक साथ उभरती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष 'जिमि करुना महँ वीर रस' में उत्प्रेक्षा है; यह हनुमान के आगमन से करुण वातावरण में उभरी आशा और वीरता को मूर्त करती है।

त्वरित सुझाव: अलंकार के नाम के बाद संभावना और प्रसंग से पैदा हुआ प्रभाव स्पष्ट करें।

अथवा

8(क). नभ में पाँती-बँधे बगुलों के पंख, चुराए लिए जातीं मेरी वे आँखें । कजरारे बादलों की छाई नभ छाया तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया । हौले-हौले जाती मुझे बाँध निज माया से । मानवीकरण अलंकार का एक उदाहरण छाँटकर उसका सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मानवीकरण में प्रकृति अथवा निर्जीव वस्तु को मनुष्य की क्रिया या गुण दिए जाते हैं।
- प्रश्न के निर्देश के अनुरूप पाठ-साक्ष्य देकर संक्षिप्त और स्पष्ट उत्तर प्रस्तुत करना।

चरण 1: उदाहरण का चयन मानवीकरण का उदाहरण है—'चुराए लिए जातीं मेरी वे आँखें'। यहाँ पंक्ति में उड़ते बगुलों के पंखों को कवि की आँखें चुरा लेने की मानवीय क्रिया करते हुए दिखाया गया है। पंख वस्तुतः आँखें नहीं चुराते; आशय यह है कि उनका सौंदर्य कवि की दृष्टि और ध्यान को पूरी तरह अपनी ओर खींच लेता है।

चरण 2: सौंदर्य का प्रभाव आँखें चुराने की कल्पना से बगुलों की आकर्षण-शक्ति सजीव हो उठती है। कजरारे बादलों के बीच उनके चमकीले श्वेत पंख इतने मनोहारी हैं कि कवि उनसे दृष्टि नहीं हटा पाता। यह प्रयोग प्रकृति और दर्शक के बीच आत्मीय संबंध बनाता है तथा कवि की सौंदर्य-मुग्धता को सहज, रोचक और चित्रात्मक ढंग से व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष पंखों द्वारा आँखें चुराने की मानवीय क्रिया मानवीकरण है; इससे दृश्य का मोहक आकर्षण और कवि की मुग्धता व्यक्त होती है।

त्वरित सुझाव: मानवीकरण में पहले प्रकृति की वस्तु और फिर उसे दी गई मानवीय क्रिया बताएँ।

8(ख). काव्यांश की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा की विशेषताओं को शब्द-चयन, बिंब और अभिव्यक्ति के उदाहरणों से स्पष्ट करना।
- प्रश्न के निर्देश के अनुरूप पाठ-साक्ष्य देकर संक्षिप्त और स्पष्ट उत्तर प्रस्तुत करना।

चरण 1: सरल और लयात्मक भाषा काव्यांश की पहली विशेषता सहज, कोमल और लयात्मक भाषा है। 'हौले-हौले' की पुनरावृत्ति बगुलों की धीमी, मनोहर गति का अनुभव कराती है। 'पाँती-बँधे' और 'कजरारे' जैसे आत्मीय शब्दों के साथ 'नभ' तथा 'श्वेत' जैसे साहित्यिक शब्द स्वाभाविक रूप से आए हैं। इससे भाषा सहज रहते हुए भी काव्यात्मक बनी है।

चरण 2: चित्रात्मक और बिंबप्रधान भाषा दूसरी विशेषता दृश्य-बिंबों से भरपूर चित्रात्मक भाषा है। 'कजरारे बादलों' और 'सतेज श्वेत काया' के प्रयोग से अँधेरे आकाश में सफेद बगुलों का विरोधी रंग-संयोजन आँखों के सामने आ जाता है। 'आँखें' चुरा लेने की अभिव्यक्ति इस दृश्य के आकर्षण को सजीव बनाती है। इस प्रकार शब्द रंग, गति और मुग्धता का अनुभव कराते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की भाषा सहज-लयात्मक तथा रंग और गति से युक्त चित्रात्मक है।

त्वरित सुझाव: भाषा बताते समय हौले-हौले से लय और कजरारे-श्वेत से दृश्य-बिंब समझाएँ।

8(ग). काव्यांश के बिंब को स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बिंब वह शब्दचित्र है जो दृश्य को पाठक की आँखों के सामने सजीव कर देता है।
- इस अंश में बादलों की साँवली पृष्ठभूमि और श्वेत बगुलों की उड़ती पंक्ति का रंग-साम्य-विरोध प्रमुख है।

चरण 1: प्राकृतिक दृश्य पहचानिए आकाश में कजरारे बादल छाए हैं। उनकी साँवली छाया पर सफेद पंखों वाले बगुलों की पंक्ति तैरती दिखाई देती है। सफेद पंक्ति का गहरे बादलों के सामने उभरना दृश्य को आकर्षक बनाता है। बगुलों की कतार सुडौल और बाँकी है; इसलिए चित्र में केवल रंग ही नहीं, गति और आकृति भी उपस्थित हैं।

चरण 2: दृश्य का मन पर प्रभाव स्पष्ट कीजिए कवि की आँखें चुराकर ले जाने और अपनी माया से उसे धीरे-धीरे बाँध लेने का कथन बताता है कि यह दृश्य उसका ध्यान पूरी तरह अपनी ओर खींच लेता है। वह आकाश की ओर एकटक देखने लगता है। बादलों की छाया को तैरती बताने से आकाश स्थिर पृष्ठभूमि न रहकर गतिशील दृश्य बन जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में साँवले बादलों पर उड़ते श्वेत बगुलों की सुंदर, गतिशील पंक्ति का दृश्य-बिंब है, जो कवि की दृष्टि और मन को बाँध लेता है।

त्वरित सुझाव: बिंब समझाते समय पहले रंग और आकृति बताइए, फिर उनकी गति तथा कवि पर पड़ने वाला प्रभाव जोड़िए।

9(क). मुक्तिबोध की कविता के शीर्षक 'सहर्ष स्वीकारा है' और उसी कविता की एक पंक्ति 'आत्मीयता बरदाश्त नहीं होती है' के अंतर्विरोध को स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में प्रिय की आत्मीयता जीवन के सुख-दुख तथा व्यक्तित्व के निर्माण से जुड़ी है।
- शीर्षक में स्वीकृति और अंतिम भावों में आत्मीयता से मुक्ति की चाह अलग मानसिक स्थितियों को प्रकट करती हैं।

चरण 1: स्वीकृति का आशय समझिए कवि ने जीवन में प्राप्त सुख-दुख, अभाव, गरबीली गरीबी, विचार और अनुभवों को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार किया है, क्योंकि उन सबमें प्रिय की छाप है। उसका व्यक्तित्व और जीवन प्रिय के प्रभाव से बने हैं। इसीलिए शीर्षक कृतज्ञता, लगाव और जीवन की संपूर्ण स्थितियों के प्रति स्वीकार का भाव व्यक्त करता है। स्वीकृति केवल सुख की नहीं, संघर्ष और सीमाओं की भी है।

चरण 2: आत्मीयता की असहनीयता स्पष्ट कीजिए प्रिय का स्नेह इतना व्यापक और घना हो गया है कि कवि अपने स्वतंत्र अस्तित्व को उसकी छाया से ढका अनुभव करता है। हर वस्तु और अनुभव में प्रिय का संबंध दिखाई देता है। यह अतिरेक आत्मा पर बोझ की तरह पड़ता है; इसलिए वही आत्मीयता अब असहनीय लगती है। कवि उससे दूरी और विस्मृति चाहता है, ताकि वह उस सर्वव्यापी प्रभाव से कुछ मुक्त हो सके।

चरण 3: अंतर्विरोध का वास्तविक स्वरूप बताइए यह प्रेम के झूठे हो जाने या पहले की स्वीकृति के गलत होने का कथन नहीं है। जिसे कवि अपने व्यक्तित्व का आधार मानकर स्वीकार करता है, उसी के अत्यधिक प्रभाव से वह व्याकुल भी हो उठता है। गहरा लगाव और स्वतंत्र आत्मचेतना की आकांक्षा साथ उपस्थित हैं। इस प्रकार दोनों कथन प्रेम की जटिल मन:स्थिति के अलग पक्ष हैं।

चरण 4: निष्कर्ष शीर्षक प्रिय से मिले जीवन की सहर्ष स्वीकृति व्यक्त करता है, जबकि उक्त पंक्ति उसी आत्मीयता के अतिरेक से उत्पन्न घुटन और स्वतंत्रता की चाह दिखाती है। विरोध आभासी है; मूल में एक ही गहरा संबंध है।

त्वरित सुझाव: दोनों कथनों को अलग संदर्भों में समझाइए: जीवन की स्वीकृति और आत्मीय प्रभाव के अतिरेक से मुक्ति की चाह।

9(ख). '' 'कैमरे में बंद अपाहिज' विकलांग/अन्यथा सक्षम व्यक्ति के प्रति क्रूरता की कविता है ।' टिप्पणी कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता करुणा के प्रदर्शन की आड़ में मनुष्य के दुख को मनोरंजन बनाने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य करती है।
- क्रूरता का केंद्र विकलांग व्यक्ति नहीं, उससे व्यवहार करने वाली कार्यक्रम-संचालन की मानसिकता है।

चरण 1: साक्षात्कार का उद्देश्य परखिए कार्यक्रम बनाने वाले स्वयं को समर्थ और शक्तिवान मानते हैं तथा सामने बैठे व्यक्ति को असहाय की भूमिका में बाँध देते हैं। वे उसकी बात सहज रूप से सुनने के स्थान पर उसकी शारीरिक असमर्थता और दुख को बार-बार उभारते हैं। प्रश्नों का उद्देश्य उसके जीवन को सम्मानपूर्वक समझना नहीं, कैमरे के लिए करुण दृश्य तैयार करना है। इसीलिए व्यक्ति अपनी पूरी मानवीय पहचान के साथ सामने नहीं आ पाता।

चरण 2: भावनात्मक दबाव की क्रूरता स्पष्ट कीजिए संचालक चाहता है कि वह अपना दुख बताए और रो पड़े। उसके चेहरे, आँखों तथा व्यथा को कैमरे में पकड़ने की कोशिश की जाती है। उससे ऐसी प्रतिक्रिया निकलवाना उसके निजी दुख में जबरन हस्तक्षेप है। दर्शकों को भी भावुक करने की योजना में उसका कष्ट कार्यक्रम की सामग्री बन जाता है। उसकी गरिमा, संकोच और इच्छा के लिए स्थान नहीं बचता।

चरण 3: कविता के व्यंग्य का लक्ष्य बताइए जिस प्रसारण को सामाजिक उद्देश्य वाला बताया जाता है, उसमें संवेदना की अपेक्षा प्रदर्शन और समयबद्ध असर की चिंता अधिक है। कार्यक्रम समाप्त होने पर दर्शक और संचालक आगे बढ़ सकते हैं, किंतु पीड़ित व्यक्ति का जीवन और दुख बने रहते हैं। कविता इस विरोधाभास को उजागर करती है कि सहायता और सहानुभूति का दावा करने वाला माध्यम स्वयं अपमानजनक व्यवहार करता है।

चरण 4: निष्कर्ष यह कविता अन्यथा सक्षम व्यक्ति पर हँसती नहीं; उसके दुख का प्रदर्शन करके उसे रुलाने और दर्शकों को प्रभावित करने वाली मीडिया की क्रूर, संवेदनहीन प्रवृत्ति का पर्दाफाश करती है।

त्वरित सुझाव: टिप्पणी में संचालक के प्रश्न, रोने का दबाव और सामाजिक उद्देश्य के दावे का विरोधाभास जोड़कर क्रूरता समझाइए।

9(ग). सोदाहरण सिद्ध कीजिए कि 'उषा' कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्दचित्र है । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शमशेर की कविता में प्रभात के रंग घरेलू ग्रामीण वस्तुओं के परिचित उपमानों से मूर्त होते हैं।
- बदलते रंग, प्रकाश और आकृतियाँ सुबह को स्थिर चित्र के बजाय क्रमशः विकसित दृश्य बनाती हैं।

चरण 1: ग्रामीण परिवेश के उदाहरण दीजिए प्रातःकालीन आकाश को नीले शंख जैसा बताने के बाद उसकी तुलना राख से लीपे चौके से की गई है, जो अभी गीला पड़ा है। चौका और उसे लीपने की क्रिया ग्रामीण घरेलू जीवन की परिचित वस्तुएँ हैं। इससे सुबह की नमी, शांति और हलका धूसर रंग एक साथ उभरते हैं। आकाश का विराट दृश्य घर के सहज अनुभव से निकट और सजीव हो जाता है।

चरण 2: बदलते रंगों के शब्दचित्र पहचानिए कहीं आकाश बहुत काली सिल जैसा है, जो लाल केसर से कुछ धुल गया हो; कहीं वह स्लेट पर लाल खड़िया चाक मल देने जैसा लगता है। सिल और केसर के उपमान में गहरे रंग पर फैलती लालिमा है। स्लेट और खड़िया के उपमान में प्रकाश की नई रेखाएँ दिखाई देती हैं। इस क्रम से स्पष्ट होता है कि भोर एक ही रंग में ठहरी नहीं है।

चरण 3: गति और परिणति स्पष्ट कीजिए नीले जल में किसी की गौर देह के झिलमिलाने जैसा दृश्य प्रकाश के कंपन और परिवर्तन को व्यक्त करता है। अंत में सूर्योदय होने से उषा का जादू टूटता है। आरंभ की नमी और धुँधलके से लालिमा, झिलमिलाहट तथा सूर्य निकलने तक का क्रम समय की गति दिखाता है। घरेलू उपमानों के कारण यह बदलता प्रभात गाँव के वातावरण से जुड़ा गतिशील शब्दचित्र बन जाता है।

चरण 4: निष्कर्ष गीले चौके, काली सिल, केसर और स्लेट के परिचित बिंबों तथा धुँधलके से सूर्योदय तक बदलते रंगों द्वारा उषा गाँव की सुबह का सजीव और गतिशील शब्दचित्र प्रस्तुत करती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में ग्रामीण उपमान और परिवर्तन का क्रम दोनों रखिए; केवल उपमान गिनाने से गतिशीलता सिद्ध नहीं होगी।

10(क). मन ख़ाली हो, तब बाज़ार न जाओ । कहते हैं लू में जाना हो तो पानी पीकर जाना चाहिए । पानी भीतर हो, लू का लू-पन व्यर्थ हो जाता है । मन लक्ष्य में भरा हो तो बाज़ार भी फैला-का-फैला ही रह जाएगा । तब वह घाव बिलकुल नहीं दे सकेगा, बल्कि कुछ आनंद ही देगा । तब बाज़ार तुमसे कृतार्थ होगा, क्योंकि तुम कुछ-न-कुछ सच्चा लाभ उसे दोगे । बाज़ार की असली कृतार्थता है, आवश्यकता के समय काम आना । 'लू' का उदाहरण क्यों दिया गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखक बाहरी प्रलोभन से बचने के लिए भीतर की सजगता और निश्चित आवश्यकता को आवश्यक मानता है।
- लू और पानी का उदाहरण बाज़ार के आकर्षण तथा लक्ष्य से भरे मन के संबंध को स्पष्ट करता है।

चरण 1: लू और पानी का संबंध समझाइए गर्मी में लू बाहर से शरीर को प्रभावित करती है। पानी पीकर निकलने पर भीतर की तृप्ति और तैयारी उसके हानिकारक प्रभाव से बचाने में सहायक होती है। लेखक इस परिचित अनुभव से समझाता है कि बाहरी प्रभाव का सामना करने के लिए मनुष्य का भीतर से तैयार होना आवश्यक है। यहाँ लू बाज़ार के प्रलोभन को समझाने का दृष्टांत है।

चरण 2: बाज़ार पर दृष्टांत लागू कीजिए इसी प्रकार मन खाली हो, अर्थात अपनी आवश्यकता और उद्देश्य का निश्चय न हो, तो बाज़ार की चमक-दमक उसे आकर्षित करके अनावश्यक वस्तुएँ खरीदवा सकती है। मन निश्चित लक्ष्य से भरा हो तो व्यक्ति केवल उपयोगी वस्तु लेता है और आकर्षण के दबाव में नहीं आता। इस स्थिति में बाज़ार उसे आर्थिक या मानसिक घाव देने के बजाय वास्तविक लाभ और आनंद देता है।

चरण 3: निष्कर्ष लू का उदाहरण यह बताने के लिए दिया गया है कि जैसे भीतर का पानी लू के प्रभाव को निष्फल करता है, वैसे ही निश्चित आवश्यकता से भरा मन बाज़ार के अनावश्यक प्रलोभन से बचाता है।

त्वरित सुझाव: दृष्टांत के दोनों जोड़े स्पष्ट रखिए: लू और बाज़ार का प्रलोभन; पानी और निश्चित आवश्यकता से भरा मन।

10(ख). बाज़ार कब घाव देता है और कब आनंद ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार का प्रभाव मन की स्थिति और निश्चित आवश्यकता पर निर्भर करता है।
- उत्तर में पाठ के प्रसंग तथा पूछे गए कारण का सीधा संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: पाठ के प्रसंग को समझना जब मनुष्य का मन खाली हो, उसे अपनी वास्तविक आवश्यकता का पता न हो और वह बाज़ार की चकाचौंध में बह जाए, तब बाज़ार उसे घाव देता है। आकर्षक वस्तुओं के सामने उसे अपनी वस्तुएँ तुच्छ लगने लगती हैं। अनावश्यक इच्छाएँ, अभाव का अनुभव और खरीद न सकने की खीझ उसे बेचैन करते हैं।

चरण 2: आशय और परिणाम स्पष्ट करना मन का लक्ष्य निश्चित हो और व्यक्ति अपनी आवश्यकता पहचानकर बाज़ार जाए, तो वह उपयोगी वस्तु खरीदता है। तब आकर्षण उसे भटकाता नहीं और बाज़ार उसके काम आता है। वह अपनी जरूरत के अनुसार खरीद करता है और अनावश्यक खर्च से बचता है। आवश्यकता पूरी होने की संतुष्टि तथा लाभ पाने से उसे आनंद मिलता है।

चरण 3: निष्कर्ष खाली और अनिश्चित मन को बाज़ार घाव देता है; आवश्यकता से भरे, लक्ष्यपूर्ण मन को उपयोगी वस्तु देकर आनंद देता है।

त्वरित सुझाव: घाव और आनंद का अंतर बताते समय दोनों को मन की स्थिति तथा आवश्यकता से जोड़िए।

10(ग). बाज़ार की असली कृतार्थता किसे माना है ? क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार की सार्थकता उसके आकर्षण में नहीं, मनुष्य की वास्तविक आवश्यकता पूरी करने में है।
- उत्तर में पाठ के प्रसंग तथा पूछे गए कारण का सीधा संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: पाठ के प्रसंग को समझना लेखक ने आवश्यकता के समय मनुष्य के काम आने को बाज़ार की असली कृतार्थता माना है। बाज़ार में अनेक वस्तुएँ उपलब्ध होती हैं, पर उसकी उपयोगिता तभी सिद्ध होती है जब व्यक्ति उनमें से अपनी जरूरत की वस्तु पा ले। वस्तुओं का प्रदर्शन या अनावश्यक खरीदारी उसकी असली सफलता नहीं है।

चरण 2: आशय और परिणाम स्पष्ट करना वस्तु का प्रयोजन जीवन की किसी जरूरत को पूरा करना है। जब खरीदार अपनी आवश्यकता जानता है, तब वह विवेक से उचित वस्तु चुनकर लाभ प्राप्त करता है और संतुष्ट होता है। इस प्रकार बाज़ार और खरीदार का संबंध उपयोगिता पर टिकता है तथा बाज़ार अपना वास्तविक उद्देश्य पूरा करता है।

चरण 3: निष्कर्ष आवश्यकता के समय काम आना ही बाज़ार की असली कृतार्थता है, क्योंकि इससे व्यक्ति को उपयोगी वस्तु और आवश्यकता की पूर्ति का संतोष मिलता है।

त्वरित सुझाव: कृतार्थता का अर्थ उद्देश्य की पूर्ति समझिए और उत्तर में आवश्यकता के समय काम आने की बात लिखिए।

10(घ). आशय स्पष्ट कीजिए — मन ख़ाली हो, तब बाज़ार न जाओ । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह कथन मन की लक्ष्यहीनता तथा बाज़ार के आकर्षण के संबंध को स्पष्ट करता है।
- उत्तर में पाठ के प्रसंग तथा पूछे गए कारण का सीधा संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: पाठ के प्रसंग को समझना यहाँ मन खाली होने का अर्थ जेब खाली होना नहीं, बल्कि मन में निश्चित आवश्यकता अथवा स्पष्ट उद्देश्य का न होना है। ऐसा व्यक्ति नहीं जानता कि उसे क्या लेना है। इसलिए सामने आने वाली हर आकर्षक वस्तु उसे अपनी जरूरत की लग सकती है और वह बाज़ार के प्रभाव में आसानी से आ जाता है।

चरण 2: आशय और परिणाम स्पष्ट करना लेखक सावधान करते हैं कि ऐसी स्थिति में बाज़ार जाने से अनावश्यक इच्छाएँ जागती हैं। व्यक्ति गैरजरूरी वस्तुओं पर धन खर्च कर सकता है अथवा सब कुछ न खरीद पाने से असंतोष अनुभव कर सकता है। इसलिए पहले अपनी आवश्यकता निश्चित करके ही बाज़ार जाना चाहिए, जिससे खरीदारी विवेकपूर्ण और उपयोगी हो।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि निश्चित आवश्यकता और स्पष्ट उद्देश्य के बिना बाज़ार नहीं जाना चाहिए, क्योंकि लक्ष्यहीन मन उसकी चकाचौंध में भटक जाता है।

त्वरित सुझाव: मन खाली होने को धन के अभाव से न जोड़िए; उसका अर्थ आवश्यकता और उद्देश्य की अस्पष्टता है।

अथवा

10(क). इसके फल इतने मज़बूत होते हैं कि नए फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते । जब तक नए फल-पत्ते मिलकर, धकियाकर उन्हें बाहर नहीं कर देते तब तक वे डरे रहते हैं । वसंत के आगमन के समय जब सारी वनस्थली पुष्प-पत्र से मर्मरित होती रहती है, शिरीष के पुराने फल बुरी तरह खड़खड़ाते रहते हैं । मुझे इनको देखकर उन नेताओं की बात याद आती है, जो किसी प्रकार जमाने का रुख़ नहीं पहचानते और जब तक नई पौध के लोग उन्हें धक्का मारकर निकाल नहीं देते, तब तक जमे रहते हैं । शिरीष के फूलों और फलों में क्या-क्या परस्पर विरोधी बातें हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फूलों की कोमलता और फलों की कठोरता के विरोध से शिरीष का विशिष्ट रूप उभरता है।
- उत्तर में पाठ के प्रसंग तथा पूछे गए कारण का सीधा संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: पाठ के प्रसंग को समझना शिरीष के फूल अत्यंत कोमल और सुंदर होते हैं। उनकी नाजुकता के विपरीत उसके फल बहुत मजबूत और कठोर होते हैं। फूलों का सुकुमार रूप आनंद देता है, जबकि सूखे पुराने फलों का खड़खड़ाना कर्कश लगता है। इस प्रकार एक ही वृक्ष पर कोमलता और कठोरता के विपरीत गुण दिखाई देते हैं।

चरण 2: आशय और परिणाम स्पष्ट करना फूल ऋतु के अनुरूप खिलकर सौंदर्य फैलाते हैं, लेकिन पुराने फल नए फूलों के निकल आने पर भी अपना स्थान नहीं छोड़ते। नए फल-पत्ते उन्हें धकेलकर हटाते हैं। वसंत के नए सौंदर्य के बीच भी उनका अड़े रहना और खड़खड़ाना फूलों की नवीनता तथा सुकुमारता से विपरीत प्रभाव उत्पन्न करता है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष के फूल कोमल और सुंदर हैं, जबकि फल कठोर, मजबूत और देर तक अड़े रहने वाले हैं; फूलों का सौंदर्य और फलों का कर्कश खड़खड़ाना परस्पर विरोधी हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में फूल और फल की एक साथ तुलना कीजिए: कोमलता के सामने कठोरता और सौंदर्य के सामने खड़खड़ाहट।

10(ख). शिरीष के फलों की क्या विशेषता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में फलों की मजबूती और पुराने स्थान पर अड़े रहने की प्रवृत्ति प्रमुख है।
- उत्तर में पाठ के प्रसंग तथा पूछे गए कारण का सीधा संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: पाठ के प्रसंग को समझना शिरीष के फल बहुत मजबूत होते हैं। नए फूल निकल आने पर भी वे वृक्ष पर अपना स्थान नहीं छोड़ते। सामान्यतः नई ऋतु और नए विकास के साथ पुराने अवशेष हट जाते हैं, पर शिरीष के पुराने फल आसानी से नहीं झड़ते। उनकी विशेषता केवल कठोरता नहीं, बल्कि लंबे समय तक टिके रहना भी है।

चरण 2: आशय और परिणाम स्पष्ट करना जब नए फल और पत्ते मिलकर उन्हें धकेलते हैं, तभी वे हटते हैं। वसंत में जब पूरी वनस्थली नए फूल-पत्तों से भर जाती है, तब भी ये पुराने फल बुरी तरह खड़खड़ाते रहते हैं। लेखक इसी अड़ियलपन के कारण उनकी तुलना उन नेताओं से करते हैं जो नई पीढ़ी के लिए स्वयं स्थान नहीं छोड़ते।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष के फल अत्यंत मजबूत और कठोर होते हैं; नए फूल आने पर भी जमे रहते हैं और नए फल-पत्तों द्वारा धकेले जाने पर ही हटते हैं।

त्वरित सुझाव: फलों की विशेषता लिखते समय मजबूत होना, न झड़ना और नई वृद्धि के धक्के से हटना क्रम से बताइए।

10(ग). वसंत ऋतु में वनों के सौंदर्य में शिरीष की प्रतिकूलता क्या है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में वसंत की नवीनता और शिरीष के पुराने फलों की कर्कशता का विरोध देखा जाता है।
- उत्तर में पाठ के प्रसंग तथा पूछे गए कारण का सीधा संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: पाठ के प्रसंग को समझना वसंत आने पर सारी वनस्थली नए फूलों और पत्तों से भर जाती है। नए पुष्प-पत्रों का सौंदर्य और उनका कोमल मर्मर वातावरण में नवीनता तथा आनंद पैदा करता है। इस समय प्रकृति पुरानेपन को छोड़कर नए जीवन का स्वागत करती दिखाई देती है। यही गद्यांश में वसंत के सुंदर परिवेश की पृष्ठभूमि है।

चरण 2: आशय और परिणाम स्पष्ट करना इसके विपरीत शिरीष के पुराने फल वृक्ष पर जमे रहते हैं और बुरी तरह खड़खड़ाते हैं। उनकी सूखी, कर्कश ध्वनि वसंत के कोमल और सुंदर वातावरण से मेल नहीं खाती। इसलिए शिरीष की प्रतिकूलता उसके नए फूलों में नहीं, बल्कि स्थान न छोड़ने वाले पुराने फलों में है, जो नवीन सौंदर्य के बीच पुरानेपन का बेमेल स्वर उत्पन्न करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष वसंत के पुष्प-पत्रमय कोमल सौंदर्य के बीच शिरीष के पुराने फलों का अड़े रहना और कर्कश खड़खड़ाना उसकी प्रतिकूलता है।

त्वरित सुझाव: प्रतिकूलता को शिरीष के पुराने फलों से जोड़िए और वसंत के कोमल सौंदर्य से उनका विरोध स्पष्ट कीजिए।

10(घ). नेताओं की तुलना शिरीष से क्यों की गई है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिरीष के पुराने फल नई कोपलों और नए फलों के आने पर भी डालियों से जुड़े रहते हैं।
- लेखक प्राकृतिक दृश्य के माध्यम से समय का परिवर्तन न पहचानने वाले नेताओं पर व्यंग्य करता है।

चरण 1: तुलना का आधार शिरीष के फल सूखकर कठोर हो जाते हैं, फिर भी पेड़ से नहीं गिरते। वसंत में दूसरे वृक्ष नए पत्तों और फूलों से भर जाते हैं, पर शिरीष के पुराने फल खड़खड़ाते हुए टिके रहते हैं। नए फल-पत्ते जब उन्हें धकेलकर हटाते हैं, तभी वे स्थान छोड़ते हैं।

चरण 2: नेताओं पर व्यंग्य लेखक को इन्हें देखकर ऐसे नेताओं की याद आती है जो अपना समय बीत जाने पर भी पद और अधिकार छोड़ना नहीं चाहते। वे बदलते समय तथा नई पीढ़ी की आवश्यकता नहीं समझते। जब नए लोग उन्हें हटाते हैं, तभी उनका अधिकार समाप्त होता है। यहाँ तुलना शिरीष के पुराने फलों से है; फूलों की कोमलता से नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष के पुराने फलों की तरह कुछ नेता भी अपना समय बीत जाने पर पद से चिपके रहते हैं और नई पीढ़ी के हटाने पर ही स्थान छोड़ते हैं। इसी जड़ता और पद-लोलुपता के कारण उनकी तुलना की गई है।

त्वरित सुझाव: तुलना लिखते समय पुराने फलों का डालियों से न हटना और नेताओं का पद न छोड़ना साथ जोड़ें।

11(क). आंबेडकर जाति-प्रथा को श्रम-विभाजन का ही एक अंग क्यों नहीं मानते ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उचित श्रम-विभाजन में कार्य का चुनाव व्यक्ति की रुचि, क्षमता और प्रशिक्षण के अनुसार होता है।
- जाति-प्रथा पेशे को जन्म से बाँधकर श्रमिकों को ऊँच-नीच के स्थायी वर्गों में विभाजित करती है।

चरण 1: स्वाभाविक श्रम-विभाजन से अंतर आंबेडकर श्रम-विभाजन को सभ्य समाज के लिए आवश्यक मानते हैं, लेकिन जाति-प्रथा को उसका सामान्य रूप नहीं मानते। इसमें केवल काम नहीं बाँटे जाते, काम करने वालों को भी ऊँच-नीच वाले खानों में बाँट दिया जाता है। यह श्रमिकों का विभाजन है। इन वर्गों के बीच सामाजिक असमानता बनी रहती है।

चरण 2: जन्म पर आधारित पेशे की बाध्यता जाति-प्रथा व्यक्ति की योग्यता, रुचि अथवा प्रशिक्षण के बजाय माता-पिता की सामाजिक स्थिति देखकर उसका पेशा निर्धारित करती है। व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुसार काम चुनने और बदलती परिस्थितियों में व्यवसाय बदलने की स्वतंत्रता नहीं मिलती। इस प्रकार यह व्यवस्था व्यक्तिगत विकास में बाधक बनती है।

चरण 3: सामाजिक और आर्थिक हानि वंशानुगत पेशे की बाध्यता से काम में अरुचि पैदा हो सकती है। उद्योगों और रोजगार की आवश्यकताएँ बदलने पर भी व्यक्ति दूसरा काम नहीं अपना पाता, जिससे बेरोजगारी और आर्थिक निष्क्रियता बढ़ सकती है। इसलिए जाति-प्रथा न स्वाभाविक श्रम-विभाजन है, न समाज की कुशलता बढ़ाने वाली व्यवस्था।

चरण 4: निष्कर्ष आंबेडकर के अनुसार जाति-प्रथा श्रम के साथ श्रमिकों को भी जन्माधारित ऊँच-नीच में बाँटती है। यह पेशा चुनने की स्वतंत्रता रोकती है और व्यक्ति तथा समाज दोनों की प्रगति बाधित करती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में श्रम-विभाजन और श्रमिक-विभाजन का अंतर स्पष्ट करके जन्माधारित पेशे की बाध्यता समझाएँ।

11(ख). 'पहलवान की ढोलक दरिद्रता, महामारी, चिकित्सा का सर्वथा अभाव और असहायता में विवश ग्रामीणों को मरने की हिम्मत देती है' — पक्ष या विपक्ष में तर्क दीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेणु की कहानी में ढोलक की ध्वनि भयग्रस्त ग्रामीण जीवन में साहस का संचार करती है।
- कथन का अर्थ मृत्यु का आह्वान नहीं, मृत्यु के भय के बीच भी मनोबल बनाए रखना है।

चरण 1: कथन के पक्ष में परिस्थिति मैं इस कथन के पक्ष में हूँ। गाँव में महामारी फैलने पर दरिद्र लोग चिकित्सा और आवश्यक साधनों से वंचित हैं। रात का सन्नाटा, मृत्यु की घटनाएँ और अपने प्रियजनों को खोने का दुःख उन्हें असहाय बना देते हैं। ऐसे वातावरण में लुट्टन पहलवान की ढोलक की आवाज भयावह निस्तब्धता को तोड़ती है।

चरण 2: ढोलक से मिलने वाला साहस ढोलक की लय ग्रामीणों को अखाड़े की संघर्षशीलता की याद दिलाती है। उसकी आवाज सुनकर उन्हें लगता है कि जीवन का संघर्ष अभी जारी है और वे पूरी तरह अकेले नहीं हैं। ढोलक रोग दूर नहीं करती, किंतु निराश लोगों के भीतर भय का सामना करने और अंतिम क्षण तक धैर्य रखने की शक्ति जगाती है।

चरण 3: पहलवान का अपना उदाहरण अपने दोनों बेटों को महामारी में खो देने पर भी पहलवान ढोलक बजाता रहता है। निजी शोक के बीच उसका यह आचरण गाँव के लिए साहस का स्रोत है। इसलिए मरने की हिम्मत देने का आशय मृत्यु को पसंद करना नहीं, बल्कि अनिवार्य संकट के सामने टूटने से बचना है। कहानी कला की इस मानवीय शक्ति को रेखांकित करती है।

चरण 4: निष्कर्ष ढोलक का स्वर साधनहीन ग्रामीणों के भय और अकेलेपन को कम करता है। वह उन्हें महामारी और मृत्यु का सामना धैर्य से करने की हिम्मत देता है; इसी अर्थ में कथन उचित है।

त्वरित सुझाव: मरने की हिम्मत का अर्थ आत्मविनाश न लिखें; इसे विपत्ति के सामने धैर्य और मनोबल से जोड़ें।

11(ग). 'काले मेघा पानी दे' पाठ में किस अंधविश्वास की चर्चा है ? जीजी उसे कैसे उचित ठहराती है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पाठ में इंदर सेना पर पानी डालने से वर्षा होने के लोकविश्वास की चर्चा है।
- जीजी इस क्रिया को इंद्र को अर्घ्य देने और अभाव में त्याग करने की भावना से उचित ठहराती हैं।

चरण 1: अंधविश्वास की पहचान पाठ में यह विश्वास है कि अनावृष्टि के समय इंदर सेना के लड़कों पर पानी डालने से इंद्र प्रसन्न होते हैं और वर्षा करते हैं। लड़के समूह में वर्षा की पुकार लगाते हुए घर-घर जाते हैं और लोग उन पर पानी डालते हैं। लेखक को यह अंधविश्वास लगता है, क्योंकि पानी की भारी कमी के समय उपलब्ध पानी भी व्यर्थ बहाया जाता है।

चरण 2: जीजी का धार्मिक और नैतिक तर्क जीजी मानती हैं कि इंद्र वर्षा के देवता हैं और इंदर सेना को पानी देना उन्हें अर्घ्य देना है। जिस वस्तु की आवश्यकता है, उसे पहले देना चाहिए। अभाव में किया गया त्याग विशेष महत्त्व रखता है; जिसके पास बहुत पानी हो, उसका कुछ पानी देना उतना बड़ा त्याग नहीं जितना पानी की कमी झेलने वाले का देना।

चरण 3: बीज के उदाहरण से औचित्य जीजी खेती का उदाहरण देती हैं कि किसान अच्छी फसल पाने के लिए बीज को धरती में डालता है। प्रत्यक्ष रूप से वह अनाज देना लगता है, पर उसी से आगे बहुत अनाज मिलता है। इसी तरह वे थोड़ा पानी देने को अधिक वर्षा पाने की आशा से जोड़ती हैं। उनका तर्क लोकविश्वास के साथ दान, त्याग और सामूहिक हित की भावना पर टिका है।

चरण 4: निष्कर्ष चर्चित अंधविश्वास इंदर सेना पर पानी डालकर वर्षा बुलाने का है। जीजी इसे इंद्र को अर्घ्य, अभाव में त्याग तथा बीज बोकर अधिक उपज पाने के तर्क से उचित ठहराती हैं।

त्वरित सुझाव: पहले वर्षा बुलाने वाला विश्वास बताइए, फिर जीजी के अर्घ्य, त्याग और बीज वाले तर्क अलग स्पष्ट कीजिए।

11(घ). '' 'नमक' कहानी में भारत-पाक की जनता के आरोपित भेदभावों के बीच मुहब्बत का नमकीन स्वाद घुला है ।' समीक्षा कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रज़िया सज्जाद ज़हीर की कहानी में नमक साझा संस्कृति, स्मृति और आत्मीयता का प्रतीक है।
- देश-विभाजन की राजनीतिक सीमाएँ साधारण लोगों के पुराने लगाव को समाप्त नहीं कर पातीं।

चरण 1: सिख बीबी की लाहौर से आत्मीयता कथन उचित है। सिख बीबी भारत में रहती हैं, फिर भी लाहौर को अपना वतन मानती हैं। सफिया के पाकिस्तान जाने का पता चलने पर वे वहाँ से थोड़ा लाहौरी नमक लाने को कहती हैं। यह माँग किसी महँगी वस्तु की नहीं, अपनी जन्मभूमि और उससे जुड़ी यादों का स्वाद फिर पाने की है।

चरण 2: सीमा पर मानवीय लगाव सफिया नमक लाने का दायित्व निभाना चाहती है। सीमा के नियम इस मामूली वस्तु को भी संदेह और रोक का विषय बना देते हैं, किंतु सीमा-शुल्क अधिकारियों का व्यवहार मानवीय आत्मीयता प्रकट करता है। पाकिस्तानी अधिकारी का दिल्ली से और भारतीय अधिकारी का ढाका से लगाव दिखाता है कि राजनीतिक निवास और हृदय का वतन अलग हो सकते हैं।

चरण 3: नमक के प्रतीक का आशय कहानी में नमक लोगों के साझा अतीत, भाषा-संस्कृति और स्मृतियों को जोड़ता है। सफिया की संवेदनशीलता तथा अधिकारियों की सहानुभूति आरोपित भेदों से अधिक प्रभावशाली दिखाई देती है। नमकीन स्वाद का आशय जीवन की सहज आत्मीयता से है, जो सीमाओं के बावजूद बनी रहती है और परस्पर सद्भाव की संभावना जगाती है।

चरण 4: निष्कर्ष नमक की छोटी-सी पुड़िया भारत-पाक की जनता के साझा अतीत और मुहब्बत को सामने लाती है। कहानी बताती है कि राजनीतिक विभाजन मनुष्यों की जन्मभूमि की स्मृति और आत्मीय संबंधों को मिटा नहीं सकता।

त्वरित सुझाव: समीक्षा में नमक को प्रतीक बताकर सिख बीबी, सफिया और दोनों अधिकारियों के प्रसंग से अपना मत पुष्ट करें।

11(ङ). 'भक्तिन' की बेटी के मानवाधिकारों का हनन पंचायत ने किस प्रकार किया ? स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रसंग स्त्री की स्वतंत्र इच्छा, गरिमा और विवाह संबंधी निर्णय के अधिकार पर पितृसत्तात्मक पंचायत के आघात को दिखाता है।
- पाठ के प्रसंग को स्पष्ट करके पंचायत के अन्यायपूर्ण निर्णय का कारण और परिणाम बताना आवश्यक है।

चरण 1: घटना का संदर्भ भक्तिन की बड़ी बेटी विधवा हो गई थी। उसके ताऊ का लड़का अपने तीतरबाज साले से उसका विवाह कराकर संपत्ति पर अधिकार जमाना चाहता था। बेटी उस व्यक्ति को पसंद नहीं करती थी और उससे विवाह के लिए तैयार नहीं थी। उस व्यक्ति ने अवसर पाकर बेटी की कोठरी में प्रवेश किया और उसके समर्थकों ने बाहर से दरवाजा बंद कर दिया। बेटी ने उसका विरोध किया तथा उसकी पिटाई भी की। इससे स्पष्ट है कि वह संबंध उसकी सहमति से नहीं बना था।

चरण 2: पंचायत के निर्णय का अन्याय पंचायत ने बेटी की इच्छा और उसके विरोध को महत्व नहीं दिया। उसने यह तर्क दिया कि कलियुग में ऐसा संबंध टाला नहीं जा सकता और एक ही कोठरी में बंद होने के कारण दोनों को पति-पत्नी की तरह रहना चाहिए। इस प्रकार छल का शिकार हुई स्त्री को ही अपराध का भार उठाना पड़ा। पंचायत ने उसकी बात सुनकर न्याय करने के बजाय षड्यंत्रकारी पुरुष का साथ दिया। इस निर्णय ने उसके जीवनसाथी चुनने, अपना पक्ष रखने और सम्मानपूर्वक स्वतंत्र जीवन जीने के अधिकार का हनन किया।

चरण 3: निष्कर्ष पंचायत ने छलपूर्वक पैदा की गई परिस्थिति को आधार बनाकर भक्तिन की बेटी पर अनचाहा वैवाहिक संबंध थोप दिया। उसकी सहमति और गरिमा की उपेक्षा ही उसके मानवाधिकारों का हनन थी।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कोठरी में बंद करने की साजिश, बेटी का विरोध और पंचायत द्वारा जबरन संबंध स्वीकार कराने का क्रम रखिए।

12(क). 'सिल्वर वेडिंग' के आधार पर उन कारणों का उल्लेख कीजिए जो यशोधर बाबू को समय के साथ नहीं बदलने देते । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यशोधर बाबू का चरित्र पुरानी जीवनदृष्टि और बदलते शहरी मध्यवर्गीय परिवेश के टकराव को सामने लाता है।
- उनकी परंपराप्रियता के कारणों को किशनदा के संस्कार, सादगी तथा परिवार के नए व्यवहार से जोड़ना चाहिए।

चरण 1: पुराने संस्कारों का गहरा प्रभाव यशोधर बाबू पर किशनदा के व्यक्तित्व और जीवनशैली का बहुत प्रभाव था। कठिन समय में मिले उनके सहारे और मार्गदर्शन के कारण वे उन्हें आदर्श मानते रहे। सादा जीवन, संयम, कर्तव्यपालन तथा पुराने सामाजिक संबंध उनके लिए मूल्यवान थे। वे अपने पहाड़ी संस्कारों और पुरानी आत्मीयता से जुड़े थे। इसलिए नए समय की हर सुविधा या प्रथा को सहज रूप से स्वीकार करने के बजाय उसे उन्हीं पुराने मानदंडों पर परखते थे।

चरण 2: नई जीवनशैली से असहजता वे नई पीढ़ी की उपभोक्तावादी सोच, दिखावे और पश्चिमी ढंग के उत्सवों से सहज नहीं हो पाते। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ को सिल्वर वेडिंग के रूप में मनाने का आयोजन भी उन्हें अपरिचित लगता है। बच्चों की आर्थिक सफलता और बदलते व्यवहार के सामने वे अपने जीवन-अनुभवों को अप्रासंगिक होते महसूस करते हैं। परिवार से खुलकर संवाद की कमी और पुरानी धारणाओं को छोड़ने की अनिच्छा उनके अकेलेपन को बढ़ाती है। नए समय के प्रति यह संशय उन्हें परिवर्तन से दूर बनाए रखता है।

चरण 3: निष्कर्ष किशनदा के प्रति श्रद्धा, पुराने पहाड़ी संस्कार, सादगी का आग्रह तथा नई पीढ़ी की जीवनशैली से असहजता यशोधर बाबू को समय के साथ सहज रूप से बदलने नहीं देते।

त्वरित सुझाव: कारण लिखते समय किशनदा का प्रभाव और नए पारिवारिक उत्सव से यशोधर बाबू की असहजता अवश्य जोड़िए।

12(ख). 'जूझ' कहानी में दत्ताजी राव देसाई की भूमिका पर प्रकाश डालिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दत्ताजी राव देसाई की भूमिका बालक की शिक्षा के पक्ष में प्रभावी सामाजिक हस्तक्षेप की है।
- किसी सहायक पात्र का महत्व उसके ठोस कार्य और मुख्य पात्र के जीवन पर उनके परिणाम से स्पष्ट होता है।

चरण 1: पढ़ाई की बाधा पहचानना आनंद की पढ़ने की तीव्र इच्छा थी, पर उसके पिता उसे खेती के काम में लगाए रखना चाहते थे। बालक की इच्छा अपने आप में पर्याप्त नहीं थी, क्योंकि घर में निर्णय पिता का चलता था। इस परिस्थिति में दत्ताजी राव देसाई ऐसे प्रभावशाली सहायक बने जिन्होंने बालक की प्रतिभा और शिक्षा की आवश्यकता को महत्व दिया। आनंद और उसकी माँ को उनके हस्तक्षेप से आशा मिली कि पिता को फिर से विद्यालय भेजने के लिए तैयार किया जा सकेगा।

चरण 2: पिता को समझाकर रास्ता खोलना दत्ताजी राव ने आनंद के पिता को बुलाकर उसकी पढ़ाई छुड़ाने पर सवाल किया। उन्होंने पिता को उसके व्यवहार के लिए फटकारा और बच्चे को पढ़ने देने के लिए दबाव डाला। पिता उनके प्रभाव को टाल नहीं सका और अंततः आनंद की पढ़ाई का मार्ग खुला। खेत के काम की कठिनाइयाँ पूरी तरह समाप्त नहीं हुईं, फिर भी विद्यालय लौटने का निर्णायक अवसर मिला। इस प्रकार दत्ताजी राव ने केवल सहानुभूति व्यक्त नहीं की, बल्कि अपने सामाजिक प्रभाव का उपयोग करके बालक के जीवन में वास्तविक परिवर्तन किया।

चरण 3: निष्कर्ष दत्ताजी राव देसाई ने पिता को समझाकर और फटकारकर आनंद को पुनः विद्यालय जाने का अवसर दिलाया। वे उसकी शिक्षा की राह खोलने वाले निर्णायक सहयोगी हैं।

त्वरित सुझाव: दत्ताजी राव की भूमिका में केवल सहायता न लिखें; पिता को बुलाना, फटकारना और पढ़ाई का अवसर दिलाना स्पष्ट करें।

12(ग). 'डायरी के पन्ने' को एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ क्यों माना जाता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन फ्रैंक की डायरी निजी अनुभवों के माध्यम से नाजी उत्पीड़न और युद्धकालीन जीवन का प्रत्यक्ष साक्ष्य प्रस्तुत करती है।
- ऐतिहासिक दस्तावेज का महत्व घटनाओं के साथ उनके मानवीय प्रभाव को प्रामाणिक रूप से दर्ज करने में भी होता है।

चरण 1: युद्ध और यहूदी उत्पीड़न का साक्ष्य ऐन फ्रैंक ने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान नाजी शासन के भय और यहूदियों पर होने वाले अत्याचारों के बीच अपने अनुभव दर्ज किए। डायरी में यहूदियों पर लगे प्रतिबंधों, गिरफ्तारी के डर और छिपकर रहने की विवशता का परिचय मिलता है। ये बातें केवल बाद में लिखा गया सामान्य इतिहास नहीं हैं, बल्कि उस संकट को स्वयं झेल रही किशोरी के समकालीन अनुभव हैं। इसलिए यह रचना उस समय के सामाजिक और राजनीतिक वातावरण की महत्वपूर्ण गवाही बनती है।

चरण 2: इतिहास का मानवीय पक्ष डायरी बताती है कि युद्ध और नस्लीय घृणा साधारण मनुष्यों के दैनिक जीवन, संबंधों और मानसिक स्थिति को कैसे प्रभावित करते हैं। छिपे हुए जीवन की सीमाएँ, भय, असुरक्षा, पारिवारिक तनाव तथा स्वतंत्रता की आकांक्षा इसमें उभरते हैं। ऐन की किशोर संवेदनाएँ बड़े ऐतिहासिक संकट को मानवीय अनुभव से जोड़ देती हैं। पाठक घटनाओं के आँकड़ों से आगे बढ़कर पीड़ित मनुष्य की स्थिति समझता है। इसी प्रत्यक्ष, संवेदनशील और समय से जुड़े चित्रण के कारण इसका महत्व निजी डायरी से अधिक व्यापक है।

चरण 3: निष्कर्ष नाजी अत्याचार, यहूदियों की असुरक्षा और युद्धकालीन छिपे जीवन का समकालीन तथा मानवीय चित्र देने के कारण ऐन फ्रैंक की डायरी एक ऐतिहासिक दस्तावेज मानी जाती है।

त्वरित सुझाव: ऐतिहासिक महत्व बताते समय युद्ध का नाम लिखकर न रुकें; यहूदी उत्पीड़न और दैनिक जीवन पर उसके प्रभाव का प्रमाण भी दें।

13(क). ऐन फ्रेंक ने अपनी डायरी किट्टी को संबोधित कर क्यों लिखी होगी ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डायरी में किट्टी ऐन की कल्पित आत्मीय सहेली का रूप है, जिसके सामने वह मन की बातें रख सकती है।
- उत्तर का केंद्र अकेलापन, विश्वास और निस्संकोच आत्माभिव्यक्ति है।

चरण 1: आत्मीय श्रोता की आवश्यकता ऐन के आसपास परिवार और परिचित लोग थे, फिर भी उसे ऐसी सच्ची सहेली का अभाव अनुभव होता था जिससे वह मन की गहरी बातें साझा कर सके। बाहरी परिचय और भीतरी आत्मीयता अलग बातें हैं। युद्ध के भय तथा छिपकर रहने की परिस्थिति ने उसके मानसिक दबाव और अकेलेपन को और तीव्र किया। वह अपनी भावनाओं को दबाए रखने के बजाय उन्हें समझने वाले किसी विश्वसनीय साथी के सामने रखना चाहती थी।

चरण 2: डायरी को सहेली का रूप देना डायरी को किट्टी नाम देकर संबोधित करने से ऐन के लिए लेखन एक आत्मीय संवाद बन गया। वह अपने सुख-दुख, आशाएँ, आशंकाएँ और निजी विचार बिना झिझक लिख सकती थी। किट्टी उसे बीच में रोकने या उसके विचारों पर तत्काल निर्णय सुनाने वाली नहीं थी। इस कल्पित सहेली के माध्यम से ऐन को मन हल्का करने और अपने अनुभवों को व्यवस्थित ढंग से व्यक्त करने का सहारा मिला।

चरण 3: निष्कर्ष ऐन ने सच्ची आत्मीय सहेली की कमी पूरी करने और अपनी निजी भावनाएँ निर्भय होकर व्यक्त करने के लिए डायरी को किट्टी नाम देकर संबोधित किया होगा।

त्वरित सुझाव: किट्टी को वास्तविक सहेली बताने से बचें; डायरी को दी गई कल्पित सहेली की पहचान और उसकी भावनात्मक भूमिका लिखें।

13(ख). 'जूझ' कहानी का संदेश संक्षेप में लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'जूझ' आनंद यादव की आत्मकथात्मक रचना है। इसमें शिक्षा पाने की उत्कट इच्छा और उसके लिए किए गए संघर्ष का चित्रण है।
- रचना का केंद्रीय संदेश है कि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी लगन, आत्मविश्वास और परिश्रम से आगे बढ़ने का मार्ग बनता है।

चरण 1: संघर्ष के प्रसंग से संदेश समझना कहानी का बालक पढ़ना चाहता है, किंतु घर की आर्थिक कठिनाइयों और पिता के विरोध के कारण उसे खेतों में काम करना पड़ता है। वह अपनी पढ़ाई की इच्छा समाप्त नहीं होने देता। शिक्षा के प्रति उसका आग्रह बताता है कि लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिनाइयों से जूझना आवश्यक है।

चरण 2: संक्षिप्त उत्तर 'जूझ' का संदेश है कि दृढ़ इच्छाशक्ति, निरंतर परिश्रम और संघर्ष से मनुष्य विपरीत परिस्थितियों पर विजय पा सकता है। लेखक गरीबी, खेती की जिम्मेदारियों और पिता के विरोध के बीच भी शिक्षा के लिए प्रयास करता है। शिक्षकों का प्रोत्साहन उसकी प्रतिभा को निखारता है। रचना शिक्षा के महत्त्व के साथ यह भी बताती है कि उचित मार्गदर्शन और स्वयं की लगन से व्यक्तित्व का विकास संभव है।

चरण 3: निष्कर्ष कहानी मनुष्य को कठिन परिस्थितियों के आगे हार मानने के बजाय शिक्षा और आत्मविकास के लिए निरंतर संघर्ष करने की प्रेरणा देती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में शिक्षा की इच्छा, बाधाओं से संघर्ष और दृढ़ परिश्रम को जोड़ें; पूरी कहानी का घटनाक्रम दोहराने की आवश्यकता नहीं है।

13(ग). मुअनजो-दड़ो कहाँ है और क्यों प्रसिद्ध है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'अतीत में दबे पाँव' में ओम थानवी ने सिंधु घाटी सभ्यता के प्राचीन नगर मुअनजो-दड़ो के अवशेषों का वर्णन किया है।
- नगर की प्रसिद्धि उसकी प्राचीनता के साथ सुव्यवस्थित नागरिक जीवन और विकसित नगर-योजना से जुड़ी है।

चरण 1: स्थान की पहचान मुअनजो-दड़ो वर्तमान पाकिस्तान के सिंध प्रांत में स्थित है। यह सिंधु घाटी सभ्यता का एक प्रमुख पुरातात्त्विक स्थल है। इसके अवशेष प्राचीन नगरीय सभ्यता के जीवन को समझने का महत्त्वपूर्ण आधार हैं।

चरण 2: प्रसिद्धि के कारण मुअनजो-दड़ो अपनी विकसित नगर-योजना, पक्की ईंटों के मकानों, व्यवस्थित सड़कों तथा ढकी हुई नालियों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ मिला विशाल स्नानागार स्वच्छता और सामूहिक जीवन के महत्त्व का परिचायक है। कुएँ, जलनिकासी की व्यवस्था तथा खुदाई में मिली मुहरें, मूर्तियाँ और अन्य वस्तुएँ इस सभ्यता की उन्नत कला, शिल्प और नागरिक व्यवस्था का प्रमाण देती हैं। इन अवशेषों से लगभग पाँच हजार वर्ष पुरानी समृद्ध सभ्यता का परिचय मिलता है।

चरण 3: निष्कर्ष मुअनजो-दड़ो पाकिस्तान के सिंध प्रांत में है और सिंधु घाटी सभ्यता की उत्कृष्ट नगर-योजना तथा समृद्ध पुरातात्त्विक अवशेषों के लिए प्रसिद्ध है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के पहले वाक्य में वर्तमान देश और प्रांत लिखें, फिर नगर-योजना, जलनिकासी और विशाल स्नानागार जैसे ठोस उदाहरण दें।

---

14. "सिंधु घाटी की सभ्यता साधन-संपन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था।" 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर सोदाहरण प्रतिपादित कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'अतीत में दबे पाँव' में ओम थानवी मुअनजो-दड़ो के अवशेषों के माध्यम से सिंधु सभ्यता की समृद्धि और उसके नागरिक स्वरूप को स्पष्ट करते हैं।
- साधन-संपन्नता का प्रमाण विकसित नगर-योजना, जल-व्यवस्था और कलात्मक वस्तुएँ हैं; आडंबर का अभाव सत्ता के भव्य स्मारकों के स्थान पर जनजीवन की सुविधाओं में दिखाई देता है।

चरण 1: कथन का आशय किसी सभ्यता का समृद्ध होना केवल विशाल राजमहलों, राजाओं की मूर्तियों या दिखावटी स्मारकों से सिद्ध नहीं होता। नागरिकों का सुव्यवस्थित जीवन भी उसकी संपन्नता का प्रमाण है। मुअनजो-दड़ो के अवशेष इसी प्रकार की सभ्यता का परिचय देते हैं। वहाँ उपलब्ध साधनों का उपयोग सामान्य जीवन को सुगम बनाने और नगर को व्यवस्थित रखने में हुआ था।

चरण 2: साधन-संपन्नता के ठोस प्रमाण नगर की नियोजित सड़कें, पक्की ईंटों के मकान, कुएँ, स्नानघर और व्यवस्थित जलनिकासी उसके उन्नत स्थापत्य तथा तकनीकी ज्ञान के प्रमाण हैं। ढकी हुई नालियों और घरों की जल-व्यवस्था से स्वच्छता के प्रति सजगता दिखाई देती है। विशाल सार्वजनिक स्नानागार के निर्माण और उसके जल-प्रबंध से सामुदायिक सुविधाओं के लिए संसाधन जुटाने की क्षमता स्पष्ट होती है। खुदाई में मिले आभूषण, मुहरें, सुंदर बर्तन तथा कलाकृतियाँ शिल्प-कौशल और समृद्ध जीवन की साक्षी हैं।

चरण 3: भव्यता के आडंबर का अभाव इस संपन्नता के बावजूद नगर में ऐसे विशाल राजप्रासाद या मंदिरों का प्रभुत्व नहीं मिलता जिनसे किसी राजा अथवा धर्मसत्ता के वैभव का प्रदर्शन होता हो। दूसरे प्राचीन समाजों की तरह यहाँ राजाओं और महंतों की विराट प्रतिमाएँ केंद्र में नहीं हैं। मूर्तियाँ और अन्य कलावस्तुएँ आकार में छोटी होते हुए भी कलात्मक हैं। इससे दिखाई देता है कि सौंदर्यबोध का अर्थ अनावश्यक विशालता या संपत्ति का प्रदर्शन नहीं था।

चरण 4: नागरिक संस्कृति के रूप में मूल्यांकन पाठ में उभरती इस सभ्यता की विशेषता उसका नागरिक अनुशासन और सामूहिक जीवन है। मकानों, सड़कों, नालियों और स्नानागार पर दिया गया ध्यान बताता है कि लोगों की दैनिक आवश्यकताएँ महत्त्वपूर्ण थीं। समृद्धि का स्वरूप उपयोगी और संयत था। उपलब्ध पुरातात्त्विक प्रमाणों के आधार पर लेखक इसे ऐसी संस्कृति के रूप में देखते हैं जिसमें कला और

व्यवस्था तो विकसित थीं, पर ताकत और संपत्ति का भड़कीला प्रदर्शन प्रमुख नहीं था।

चरण 5: निष्कर्ष अतः सिंधु घाटी की सभ्यता की संपन्नता उसकी नगर-योजना, स्वच्छता, सार्वजनिक सुविधाओं और शिल्प में प्रकट होती है। राजसी या धार्मिक वैभव के विराट प्रदर्शनों का अभाव बताता है कि उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था; उसका वास्तविक गौरव सुव्यवस्थित नागरिक जीवन था।

त्वरित सुझाव: कथन के दोनों पक्ष सिद्ध करें: संपन्नता के लिए नालियाँ, कुएँ और स्नानागार दें, तथा आडंबर के अभाव के लिए राजप्रासादों और विराट सत्ता-प्रतिमाओं के अभाव का उल्लेख करें।

अथवा

14. 'सिल्वर वेडिंग' कहानी के आधार पर यशोधर बाबू के व्यक्तित्व की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी 'सिल्वर वैडिंग' में यशोधर बाबू के माध्यम से परंपरागत जीवन-मूल्यों और नई पीढ़ी की बदलती जीवन-शैली का द्वंद्व सामने आता है।
- चरित्र-चित्रण में पात्र के विचारों के साथ उसके आचरण, संबंधों और विशिष्ट प्रसंगों को प्रमाण बनाना आवश्यक है। यशोधर बाबू की विशेषताओं के साथ उनकी सीमाएँ भी समझनी चाहिए।

चरण 1: सादगी, अनुशासन और परिश्रम यशोधर बाबू सादगी पसंद, परिश्रमी और अनुशासित व्यक्ति हैं। वे दफ्तर की नियमित दिनचर्या और पुराने ढंग के रहन-सहन को महत्त्व देते हैं। संघर्ष करके जीवन में स्थान बनाने के कारण वे पैसे और सुविधाओं की कीमत समझते हैं। उन्हें दिखावा और अनावश्यक खर्च आकर्षित नहीं करते। इसीलिए विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर आयोजित भव्य समारोह उनके लिए सहज आनंद का अवसर नहीं बन पाता।

चरण 2: संस्कारों और आत्मीय संबंधों के प्रति निष्ठा यशोधर बाबू परंपरागत संस्कारों, पारिवारिक दायित्वों और अपने पहाड़ी समाज से जुड़े हुए हैं। वे रिश्तों को केवल सुविधा या प्रतिष्ठा के आधार पर नहीं परखते। परिवार और परिचितों के सुख-दुःख में शामिल होना उनके लिए महत्त्वपूर्ण है। किशन दा के प्रति उनकी श्रद्धा विशेष रूप से उल्लेखनीय है। युवावस्था में मिले उनके संरक्षण और सीख को वे भूलते नहीं हैं तथा अनेक स्थितियों में उनके विचारों को याद करते हैं। यह उनके कृतज्ञ और संवेदनशील स्वभाव को प्रकट करता है।

चरण 3: आधुनिकता के प्रति संकोच और पीढ़ियों का अंतर वे नई पीढ़ी की दिखावे पर आधारित आधुनिक जीवन-शैली को सहजता से स्वीकार नहीं कर पाते। बच्चों के तौर-तरीकों, सामाजिक व्यवहार और आर्थिक उन्नति के प्रति उनके मन में संशय रहता है। दूसरी ओर, पत्नी और बच्चे समय के साथ बदल रहे हैं। विवाह की वर्षगाँठ को अंग्रेजी ढंग से मनाना उन्हें अपने संस्कारों से अलग लगता है। उनकी आपत्ति के पीछे सादगी का आग्रह है, लेकिन नए परिवेश के प्रति अनम्यता भी है। इसी कारण वे अपने ही परिवार के बीच अकेलापन अनुभव करते हैं।

चरण 4: स्वाभिमान के भीतर छिपी भावुकता यशोधर बाबू स्वाभिमानी हैं और अपनी मान्यताओं को आसानी से छोड़ना नहीं चाहते। फिर भी वे भीतर से अत्यंत भावुक हैं तथा बच्चों का स्नेह चाहते हैं। भूषण के दिए ड्रेसिंग गाउन के प्रसंग में उनकी यह मनःस्थिति स्पष्ट होती है। पुत्र उसे पहनकर दूध लेने जाने की बात कहता है, पर पिता का मन चाहता है कि पुत्र उनकी सुविधा और विश्राम का भी ध्यान रखे। यहाँ उपहार के भौतिक मूल्य से अधिक आत्मीय व्यवहार की उनकी आकांक्षा उजागर होती है। इस प्रकार उनकी कठोर दिखाई देने वाली प्रतिक्रिया के पीछे अपनापन पाने की इच्छा है।

चरण 5: निष्कर्ष यशोधर बाबू सादगी, अनुशासन, कृतज्ञता, स्वाभिमान और संवेदनशीलता से युक्त व्यक्ति हैं। उनकी परंपरानिष्ठा उन्हें नैतिक आधार देती है, किंतु बदलते समय से सामंजस्य न बैठा पाने के कारण वे परिवार में अलगाव अनुभव करते हैं। वे पुरानी और नई पीढ़ी के बीच खड़े ऐसे व्यक्ति हैं जिनकी सबसे बड़ी आवश्यकता स्नेह और समझ है।

त्वरित सुझाव: चरित्र की प्रत्येक विशेषता के साथ कहानी का एक प्रसंग जोड़ें; किशन दा की स्मृति, वर्षगाँठ का समारोह और ड्रेसिंग गाउन का उपहार उपयोगी प्रमाण हैं।